स्वतत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए

कृष्ण किशोर तिवारी
निदेशक,
ए..सी.सी. प्राइवेट लि0
(सदस्य, ब्लाईण्ड एसाइलम, नैनी)
7ई / 5, ताशकंद मार्ग, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
मो0:9415347555

श्रीमती सोशन एलिजाबेथ
महासचिव,
द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड(अंधा खाना, नैनी)
नैनी सेण्ट्रल जेल के पास, जेल रोड पावर हाउस, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद मो0:9415347555

रेवा नन्दन द्विवेदी
संयुक्त सचिव(सिविल इंजीनियर)
द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड (अंधा खाना, नैनी)
नैनी सेण्ट्रल जेल के पास, जेल रोड पावर हाउस, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद, मो0:9415347555

चौधरी परशुराम निषाद
प्रदेश महासचिव, अपना दल,
तिलक नगर, इलाहाबाद
मो0:9935667690

जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां

डॉ० शिवगोपाल मिश्र
प्रधानमंत्री,विज्ञान परिषद, इलाहाबाद के 13 सितम्बर को 70 वे जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

अजीत कुमार जायसवाल
जिलाध्यक्ष,
भारतीय जनता पार्टी
युवा मोर्चा, देवरिया

विश्व स्नेह समाज

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

अंक ११ सितम्बर२००७ इलाहाबाद

सिक्कों ने बाजार की व्यवस्था बिगाड़ा

इस समय प्रदेश में एक और दो के सिक्के गायब है. सिक्कों का जबर्दस्त टोटा होने के कारण बाजार व्यवस्था लड़खड़ा गई है. इस्पात और आभूषण कारोबारियों द्वारा धड़ल्ले से सिक्कों का इस्तेमाल करने से जहां दुकानदार परेशान हैं, वहीं ग्राहक भी इस समस्या से रुबरु हो रहे है.

बाजार से गायब हो रहे सिक्के अर्थ व्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर रहे है. पिछले छह महीनों से अचानक एक और दो सिक्के गायब होने लगे. डिमांड बढ़ने पर कालाबाजारी तय है. कुछ जगह को २० रुपये के बदले १८ रुपये, ११५ रुपये के बदले १०० रुपये के सिक्के दिये जाने लगे है. इसके पीछे मुख्य कारण इस्पात और आभूषण कारोबारियों को माना जा रहा है. इसके पीछे का छुपा हुआ तथ्य यह है कि इन सिक्कों को गला कर सिल बना ली जाती है जिनका इस्तेमाल चांदी के गहने बनाने में किया जाता है. एक और दो सिक्कों में पाया जाने वाला मेटल बाजार में मिलने वाले इस्पात की तुलना में सस्ता होता है. इस कारोबारियों द्वारा सिक्कों का गलाने का गोरखधंधा धड़ल्ले पर है. अभी हाल ही में वाराणसी, इलाहाबाद व कानपुर में कुछ कारोबारियों पकड़े भी गये है. जिनके पास कई कुंटल गले हुए सिक्के और हजारों की संख्या गलाने को तैयार सिक्के पाये गये. कारोबारियों की माने तो एक रुपये के सिक्के में जितना मेटल मिल जाता है, उसकी कीमत बाजार में एक रुपये तीस पैसे बैठती है. इस प्रकार हम कह सकते है कि एक रुपये के एक हजार सिक्कों से तेरह सौ रुपये का मैटेरियल मिल जाता है.

दूसरे चाय, पान, परचुन के दुकानदार इस आड़ में कुछ अपनी भी रोटी सेंक रहे है. वे अपने पास सिक्कों के रहने के बावजूद फुटकर न होने का रोना रोकर या तो पांच, दस रुपये का सामान खरीदने को कहते है या एक, दो रुपये के बदले टॉफी या अन्य सामान देकर अपनी बिक्री को बढ़ाते है. इतनी कालाबाजारी के बावजूद सिक्के बाजार में है. मेरे एक परिचित ने एक पान के दुकानदार को बीस रुपये का नोट पकड़ाकर एक पान खाया उन्हें दुकानदार ने अठारह रुपये के एक-एक के सिक्के दिये. वह इसलिए की वह उनका परिचित दुकानदार था अन्यथा वहीं दुकानदार अन्य ग्राहकों को पांच रुपये का सामान लेने को वहीं मेरे सामने बाध्य कर रहा था. जब फुटकर नहीं थे तो अट्ठारह रुपये के सिक्के कहां से आए.सबसे अहम बात है यह है कि सरकारी स्तर पर इसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हो रही है. कुल मिलाकर उपभोक्ता पीस रहा है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः
1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग– 4
महात्मा गॉधी और हिंदी– 5
हिन्दी की संवैधानिक एवं व्यवहारिक स्थिति– 6
हिन्दीबाल साहित्यःदशा और दिशा–7
मुसलमान रचनाकारों की हिन्दी सेवा–9
व्यंग्यःसमाज सुधार में जूते का योगदान–12
व्यक्तित्व– 21
पत्राचार से करें एम.ए.हिन्दी–23
स्नेह बाल मंच–26
कविताएं– 17,18 19, 21,24,28
साहित्य समाचार–16,26
अध्यात्म– 22
कहानी–14,17, 24 लघु कथा–32
स्वास्थ्य–यह बहती हुई नाक–27
ज्योतिष–बिना पूछे रत्न न पहने–29
चिट्ठी आई है– 30
जरा हंस दो मेरे भाय–33
समीक्षा– 34

अहं का कोहरा

रसोईघर में रोटियां बनाते-बनाते रसोइये को घमंड हो गया. वह बड़बड़ाने लगा-"आखिर रोटियां मेरी ही मेहनत का फल है." बेलन को यह बात बुरी लगी. वह बोला-"मेरे बिना रोटियों को आकार कौन प्रदान करेगा? अतः रोटियां मेरी मेहनत का फल हैं." इसी प्रकार बारी-बारी से चकले, तवे और पानी ने भी अपनी-अपनी सफाई पेश की. अंत में आग बोली-

"यदि तुम सारे हो और मैं न होऊं तो क्या रोटियां पक सकेगी? नहीं न, किंतु रोटियां सिर्फ मेरी मेहनत का फल नहीं है. यह तो हम सबके सहयोग का परिणाम है."

रसोइये की आंखे खुल गई. उसके अहं का कोहरा छट गया था.

++++++++++++++++++++++++++++++++

यक्ष प्रश्न

"पापा, क्या गांधीजी सदा सत्य बोलते थे?"रोहित ने पूछा.

"बिल्कुल बेटे." पन्नु साहब से दृढ़ स्वर में कहा.

"पापा, हमें भी गांधीजी जैसा ही बनना चाहिए." रोहित ने पुनः उत्सुक स्वर में पूछा.

"बिल्कुल बेटे." पन्नु साहब के स्वर में इस बार दो गुना आत्मविश्वास था.

"पापा, यदि गांधी के पापा भी कहते तो भी क्या वह झूठ नहीं बोलते थे?" रोहित की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी.

"बिल्कुल नहीं, बेटे!" पन्नु साहब बिना हिचकिचाहट के बोले.

"फिर तो पापा मैं गांधीजी जैसा नहीं बन पाऊंगा." रोहित ने हताश स्वर में कहा.

"क्यों बेटे?" पन्नु साहब ने प्रश्नवाचक नजरों से उसकी तरफ देखकर पूछा.

"क्योंकि पापा उस दिन आपके कहने पर मैंने आफिस से आये चपरासी को कहा था कि आप घर पर नहीं है." रोहित अपना वाक्य एक सांस में ही खत्म करके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा.

पिता को लगा कि पुत्र के इस यक्ष प्रश्न का जवाब उसके पास नहीं है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

✍ श्रद्धा के समान प्रभु की प्राप्ति में सहायक कोई दूसरा साधन नहीं है. परमेश्वर से नाता जुड़ जाने पर यह संसाररूपी कारागार ऐश्वर्यपूर्ण समृद्ध राज्य बन जाता है.

✍ दूसरों से ईर्ष्या करना दुर्बल, कायर तथा डरपोक व्यक्ति का निकृष्टतम स्वभाव है.

✍ कोई व्यक्ति आपके साथ बुरा व्यवहार करें, आपका अनादर तथा अपमान करें, उस समय अपने मन पर नियंत्रण कीजिए.

आदाब अर्ज

किस किसको कोई कहे, कागा कहें कबीर।
कंचन का कथनी-कलश, करनी कुटिल कुटीर।।

नियतखोर नेता हुए, होगा क्या परिणाम।
बगल छुरी दाबे हुए, मुँह से भजते राम।।

शान्त आदमी दिख रहा, मन में घोर अशान्ति।
शान्ति कहीं दिखती नहीं, कण-कण में है क्रान्ति।।

धन, दौलत, निज बाहुबल, सुरा-सुन्दरी संग।
पागल हो नर घूमता, खूब चल रही जंग।।

पाणिग्रहण के चन्द्र को, ग्रसता राहु दहेज।
कन्या-कलिका मिट गई, बैठ कंटीली सेज।।

शिक्षित जन मारे फिरें, रोजगार की चाह।
युवा विकल, बेबस, व्यथित, दिखे न कोई राह।।

कठिन परिश्रम से कृषक, दीन-हीन कृशकाय।
व्यथा-कथा अपनों किसे, कब कैसे बतलाय ?

खेमों में हैं बँट गये, राम और रहमान।
हिन्दू-मुस्लिम हम हुए, बन न सके इन्सान।।

जड़-चेतन सब एक हैं, सब ईश्वर सन्तान।
भेदभाव फिर आज क्यों, मानव का अज्ञान।।

हरियाली होती जहाँ, होता वहीं विकास।
हरियाली बिन प्रगति है, बस थोथी बकवास।।

चमचा, चम्मच, चाँदनी, चहुँदिशि चारू चकोर।
चमचम चाटे चौक चल, चतुर चितेरे चोर।।

सिसकी-सिसकी भर रहीं, करूणा करे पुकार।
मानवता को लोग सब, आज रहे दुत्कार।।

अखिलेश निगम 'अखिल', लखनऊ, उ.प्र.

महात्मा गॉधी और हिन्दी

एस.बी.मुरकुटे, बेलगांव, कर्नाटक

हिन्दी किसी विशेष समुदाय की भाषा नहीं है वरन वह सर्व जन की भाषा है. हिन्दी के ही माध्यम से जन सामान्य तक पहुंचना आसान है सरकार तथा जनता के बीच यह भाषा सम्पर्क स्थापित करने में सक्षम है.

गांधी जी का यह स्पष्ट मत था कि जो अपनी भाषा से प्यार नहीं करता वह अपने देश से प्यार नहीं करता.

महात्मा गांधी ने हिन्दी की व्यापकता, संरचना और लोकप्रियता के कारण राष्ट्रीय आंदोलन में भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण किया.

महात्मा गॉधी जानते थे कि राष्ट्रीय एकता के लिए केवल एक ही भाषा समर्थ भूमिका निभा सकती है और वह है हिन्दी. हिन्दी किसी विशेष समुदाय की भाषा नहीं है वरन वह सर्व जन की भाषा है. हिन्दी के ही माध्यम से जन सामान्य तक पहुंचना आसान है सरकार तथा जनता के बीच यह भाषा सम्पर्क स्थापित करने में सक्षम है. १९६४ में शिक्षा आयोग ने जो त्रिभाषा की बात रखी थी, गांधीजी ने बहुत पहले ही इसकें संकेत दे दिए थे.

अंग्रेजी-साम्राज्य अंग्रेजी भाषा का प्रचार-प्रसार करना तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को समाप्त करना चाहता था ताकि भारतीय संस्कृति, साहित्य और धर्म भारत से मिट जाये. इसलिए लॉर्ड मैकाले का प्रयास था कि भारतीय भाषाओं को हीन दिखाया जाए और अंग्रेजी को श्रेष्ठ. गांधीजी अंग्रेजों की इस कूट नीति को समझ गये. इसलिए उन्होंने अपनी मातृभाषा को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए मार्मिक शब्दों में कहा था-"मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियां क्यों न हों मैं इससे उसी तरह चिपटा रहूंगा जिस तरह बच्चा अपनी मां की छाती से. वही मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है. अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है, जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख्त नफरत करूंगा."

गांधीजी का स्पष्ट मानना था कि हमें अपनी भाषा से जितना आनंद, प्यार एवं स्नेह मिलता है उतना किसी विदेशी भाषा से कदापि नहीं.

गांधीजी ने हिन्द स्वराज्य में कहा था कि मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा की जो बुनियाद डाली वह सचमुच में गुलामी की बुनियाद थी. हिन्दुस्तान को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग हैं.

अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन, लखनऊ में गांधीजी ने सामान्य जीवन और न्यायलीयन कार्यो में हिन्दी अपनाने पर बल देते हुए कहा था "मैं अब सब भाइयों से टूटी-फूटी हिन्दी बोलता हूँ. थोड़ी अंग्रेजी बोलने में मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि मानों मुझे इससे पाप मिलता है." गांधीजी के इस वक्तत्व को हम आज भी नहीं समझ पा रहे है.

गांधी जी का यह स्पष्ट मत था कि जो अपनी भाषा से प्यार नहीं करता वह अपने देश से प्यार नहीं करता. भाषा को बनाना और बढ़ाना हमारा ही कर्तव्य है.

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है. मैकाले द्वारा प्रतिपादित यह शिक्षा प्रणाली हमारी भारतीय स्थिति के अनुकूल नहीं हैं. गांधीजी ने कहा था-अंग्रेजी ने हमें मानसिक रूप से पंगु बना दिया है.

१९४७ में एशियाई सम्मेलन में गांधीजी ने अपना भाषण हिन्दी में दिया था.

इस प्रकार हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में महात्मा गांधी ने स्पष्ट विचार थे. उन्होंने इसे राष्ट्रभाषा बनाने के लिए न केवल सपने संजोये थे बल्कि उन्हें साकार रूप भी दिया. इन्हीं की प्रेरणा और सत्प्रयास से अहिन्दी भाषी क्षेत्र में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास की स्थापना हुई. आज ये संस्थायें हिन्दी के प्रसार और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है.

हम सबका पुनीत कर्तव्य है कि हम एक जुट होकर हिन्दी को बढ़ाये तथा महात्मा गांधी जी का स्वप्न साकार करें.

हिन्दी भाषा के कुछ रोचक तथ्य

- १७४३ में हिन्दी व्याकरण का अनुवाद लैटिन भाषा में किया गया.
- हिन्दी का प्रथम व्याकरण विदेशियों के द्वारा लिखा गया था?
- सन् १७०४ के आस-पास डच मालिकों की सुविधा के लिए डच भाषा में हिन्दी का व्याकरण लिखा गया.
- प्रथम व्यवस्थित गद्य ग्रन्थ एक गैर हिन्दी भाषी लल्लू लालजी द्वारा लिखा गया था जो कि गुजराती भाषी थे.
- हमारे देश के पंजाब राज्य में हिन्दी भाषा को पत्नी भाषा के नाम से जाना जाता है.

रचना यादव, अहमदाबाद

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी की संवैधानिक एवं व्यवहारिक स्थिति

✍ भाषा राष्ट्र की अस्मिता है. विडम्बना यह है कि भारतीय संविधान में हिन्दी को जो अधिकार मिलना चाहिए था वह नहीं मिला.

✍ यहाँ हिन्दी को राजभाषा की मान्यता तो प्रदान की गई किन्तु इसी अनुच्छेद में आगे यह प्रावधान भी किया गया कि संविधान लागू होने के १५ वर्ष की कालावधि तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी जारी रहेगा.

✍**कैलाश त्रिपाठी,** औरैया, उ.प्र.

दिवस संस्कृति के परिणाम स्वरूप हिन्दी दिवस की परम्परा चल गई. परम्परा निर्वाह हेतु हिन्दी दिवस के साथ 'हिन्दी सप्ताह', 'हिन्दी पखवाड़ा', 'हिन्दी मास' आदि प्रतिवर्ष आडम्बर सहित मनाये जाते है. भावनात्मक भाषण और औपचारिक घोषणायें तो बहुत होती हैं परन्तु यथार्थ में हिन्दी से हम स्वयं दूर होते जा रहे हैं. इन आयोजनों के परिणाम बहुत अधिक आशा के अनुरूप नहीं है. स्वाधीनता के इतने वर्ष उपरान्त भी देश में राज-काज की भाषा का स्वरूप निर्धारण न हो पाना गहन चिंता का विषय है. वस्तुतः हिन्दी ही देश की सार्वदेशिक भाषा है, इसीलिए राष्ट्र भाषा के रूप में मान्यता की अधिकारिणी भी. यह सत्य है कि भारत एक बहुभाषी देश है परन्तु यहाँ सदैव से एक सार्वदेशिक भाषा भी रही है. पूर्व में संस्कृत भाषा को सार्वदेशिक भाषा का स्थान प्राप्त था. संस्कृत के बाद प्राकृत, अपभ्रंश तथा बाद में हिन्दी ने सार्वदेशिक सम्पर्क भाषा का स्थान लिया. मुस्लिम शासन काल में उर्दू-फारसी तथा ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी भाषा का भी राज-काज की भाषा के रूप में सार्वदेशिक महत्व रहा, परन्तु यह भाषायें सार्वजन्य एवं सार्वदेशिक सम्पर्क भाषा के रुप में स्थापित नहीं रही.

भाषा राष्ट्र की अस्मिता है. विडम्बना यह है कि भारतीय संविधान में हिन्दी को जो अधिकार मिलना चाहिए था वह नहीं मिला. १४ सितम्बर, १९४९ को भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राज भाषा के रुप में स्वीकारा अर्थात् शासकीय काम-काज की भाषा हिन्दी होगी. भारत के संविधान में भाषा सम्बन्धी प्रावधान अनुच्छेद ३४३ से ३५१ तक दिये गये हैं. अनुच्छेद ३४३(१) के अनुसार हिन्दी स्वाधीन भारत की राजभाषा तथा देवनागरी इसकी लिपि है. यहाँ हिन्दी को राजभाषा की मान्यता तो प्रदान की गई किन्तु इसी अनुच्छेद में आगे यह प्रावधान भी किया गया कि संविधान लागू होने के १५ वर्ष की कालावधि तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी जारी रहेगा. इस अवधि के उपरान्त शासकीय कार्यो में अंग्रेजी के प्रयोग की अनुमति केवल संसद द्वारा पारित अधिनियम के आधार पर ही दी जा सकती है. इसी संवैधानिक उपबन्ध के अधीन राजभाषा अधिनियम १९६३ पारित किया गया. इस अधिनियम की धारा ३(१) के अधीन संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की भी अनुमति दी गई. इस अधिनियम में यह व्यवस्था भी दी गई कि अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की समाप्ति हेतु सहमत न हो और संसद के दोनों सदन भी तत्सम्बन्धी संकल्प पारित न कर दें. इस प्रकार हमारे राजनेताओं द्वारा केन्द्रीय प्रशासन में द्विभाषिकता की यह स्थिति संविधान में सीमित समय तक की गई. आरक्षण की व्यवस्था की भांति सदैव के लिए स्वीकार कर ली गई. स्पष्ट है कि भारतीय संविधान ने हिन्दी को राजभाषा सिद्धांत रूप में तो स्वीकार किया परन्तु व्यवहारिक रूप में अंग्रेजी में काम-काज करने की खुली छूट भी दी. संविधान की आठवीं अनुसूची में पन्द्रह भाषाओं (असमी या उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलगु, पंजाबी, बंगला, मराठी, मलयालम, सिन्धी और हिन्दी) को सम्मिलित करते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान न देकर राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया. हिन्दी को राष्ट्र भाषा के जो अधिकार मिलने चाहिये थे वह नहीं मिले.

भारत की लोकसभा ने १८ जनवरी, १९६८ को सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया कि केन्द्रीय सरकार का समस्त कार्य राजभाषा हिन्दी में होगा. इस प्रस्ताव का पूर्णरूपेण क्रियान्वयन अद्यतन संभव नहीं हो सका. इसके लिए हमारी दोहरी मानसिकता सहयोगी है एवं राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी है. हमें भारतीयता पर गर्व के साथ हिन्दी भाषा पर भी गर्व होना चाहिए. अंग्रेजी के बढ़ते प्रभुत्व और हिन्दी की उपेक्षा में कहीं न कहीं हिन्दी भाषी भी दोषी है. ब्रिटिश शासन की समाप्ति, अंग्रेजों के पलायन के उपरान्त अभी भी हम पर अंग्रेजियत का भूत सवार है. नगरों में ही नहीं, छोटे-छोटे कस्बों

और गांवो में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की बाहुल्यता हो रही है. अंग्रेजी में बोलना गौरवयुक्त तथा हिन्दी या अन्य प्रादेशिक भाषाओं में बोलना गॅवारुपन का प्रतीक हो गया है. इसका कारण हमारी दोहरी मानसिकता है. हिन्दी भाषी भी हिन्दी की उपेक्षा और अवहेलना करते हैं. हिन्दी दिवस मनाते हैं, व्याख्यान देते हैं, हिन्दी की वकालत करते हैं तथा अपने बच्चों और परिवार को पाश्चात्य जीवन शैली और संस्कृति की ओर प्रेरित करते हैं, अपने को सामान्य से विशिष्ट प्रदर्शित करने हेतु अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र, नेम प्लेट, लैटर हैड, विजिटिंग कार्ड बनावाना, अपने को शिक्षित एवं विद्वान दर्शानें के लिए हिन्दी भाषियों द्वारा अत्यधिक अंग्रेजी शब्दों का अनावश्यक प्रयोग भले ही वह त्रुटिपूर्ण एवं गलत ही क्यों न हों. अंग्रेजी माध्यमों के मंहगे स्कूलों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने में अपनी प्रतिष्ठा मानते हैं. मंहगे अंग्रेजी स्कूलों में बच्चों की शिक्षा प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गई है. प्रकारान्तर में यह मानसिक दासता ही है. जब तक हम अंग्रेजीयुक्त पाश्चात्य सभ्यता को श्रेष्ठ मानते हुए उसका अनुसरण करते रहेंगें, हिन्दी उपेक्षित रहेगी. लंदन में छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन में स्व. नरेन्द्र ने कहा था कि हिन्दी बोलने वालों को मानसिक दासता का रवैया छोड़ देना चाहिए. इसी रवैये के कारण हिन्दी को राजभाषा का वह स्थान प्राप्त न हो सका जो होना चाहिये था.

दि मारल साप्ताहिक
सपादकः श्री शिवशरण त्रिपाठी
२५/१६, कराची खाना, कानपुर-२०८००१
समाचार क्रांति हि.साप्ताहिक
संपादक,६८, नया बाजार, खड़गपुर, २२१३०१

हिन्दी का बाल साहित्यः दशा और दिशा

सत्यदेव आजाद, मथुरा,उ.प्र.

बालक-प्रकृति की श्रेष्ठतम कृति है, अनमोल देन है, सबसे निर्दोष वस्तु है. वह सहज है, सरल है. उस पर न कोई छाया है और न किसी पूर्वग्रह की कालिमा है. कोरी स्लेट की तरह वह निर्मल है, जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है. उसके अलिखित और अनचाहें भविष्य की दिशा निश्चित करना हमारा काम है. हम यह कार्य साहित्य के माध्यम से करते हैं. इसलिए बाल-साहित्य की महत्ता अन्य साहित्य से अधिक हो जाती है, क्योंकि वह बालकों में संस्कार की सृष्टि करता है. उन्हें वह देता है जो बालकों के पास नहीं होता.

क्या, क्यों और कैसे की अतुत सम्पत्ति लेकर बालक धरती पर आता है और इन्हीं के सहारे उसकी जिज्ञासा ज्ञान का अर्जन करती है. यह ज्ञान जहॉ उसे एक ओर सहज अनुभव से प्राप्त होता है. वहीं दूसरी ओर साहित्य इस क्षेत्र में अपने प्रयास से भी उसकी जिज्ञासा शान्त करता चलता है. इन्हीं दृष्टियों से बाल-साहित्य का भी मूल्यांकन होना चाहिए. वस्तुतः अभी यह हिन्दी में नहीं हुआ है. विदेशों में बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास की आवश्यकता तथा उसकी ग्राहयता के सम्बन्ध में अनेक शोध और सर्वेक्षण हुए हैं. वास्तव में हमारे देश में ऐसे सर्वेक्षण की ओर अभी लोग सोच नहीं पाये हैं. जिन्हें हम मानव का जनक समझते हैं. वह भी अब उपेक्षित है.

बाल-साहित्य जहां बच्चों की रूचि की सन्तुष्टि करता है वही उसमें जिज्ञासा को शान्त करने की भी क्षमता होनी चाहिए. सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, ईसप की कहानियॉ आदि ग्रन्थ बाल-साहित्य के नाम पर हमारे यहॉ बहुत पहले से उपलब्ध है. इन कहानियों में जीवन का शाश्वत सत्य बोलता है. इनमें स्थायी मानव-मूल्य की स्थापना है. परिश्रम करना, ज्ञानार्जन करना, बड़ों का आदर करना, गुरू की सेवा आदि के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा एवं बताया गया है. किन्तु वह आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में अपूर्ण है. आज का जीवन वैज्ञानिक उपब्धियों से घिरा है. रेडियो है, टेलीविजन है, विद्युत के अनेक उपकरण है, जिन्होंने जीवन को सहज बनाने की चेष्टा की है. वायुयान है, जलयान है, जिन्होनें हमें जीवन को दुर्गति प्रदान की है. बच्चों की सहज जिज्ञासा इन सबकों जानना चाहती है. वह जानना चाहती है कि पत्र जो डाक के डिब्बे में डाले जाते हैं, वे कैसे अभीष्ट स्थान पर पहुॅच जाते हैं? टेलीफोन पर दूर बैठे व्यक्ति से बात कैसे होती है? पक्षियों की तरह वायुयान हवा में कैसे उड़ते है? क्या इन सबका उत्तर आज का बाल-साहित्य दे सकता है?

यह सत्य है कि इधर हिन्दी में प्रभूत बाल-साहित्य प्रसूत हुआ है. आये दिन नगरों में उच्चकोटि की बाल-पत्रिकायें भी निकल रही है. बालगीतों के क्षेत्र में कुछ उत्कृष्ट रचनायें आयी है. बाल-कहानी और नाटक भी लिखे जा रहे हैं. ये शुभ लक्षण हैं. किन्तु यह बाल-साहित्य और उसके विकास की यह दिशा समुचित नहीं लगती है. अंग्रेजी में शेक्सपीयर के नाटकों के बाल-संस्करण प्रकाशित हुए है. संसार के 'क्लैसिक्स' के बाल संस्करण देखे जाते हैं. क्या हिन्दी में रामचरित मानस का बाल संस्करण है, या सूर कबीर, रहीम

जैसे कवियों के, जो हमारे जन-जीवन में समाये हुए है, कोई बाल-संस्करण निकले हैं? वास्तव में ये न तो प्रकाशित हैं, न कहीं से प्रकाशित होने की योजना हमें जानकारी है.

फिर वैज्ञानिक उपलब्धियों की जानकारी देने वाला बाल-साहित्य तो नगण्य ही है. आज भी बच्चों के लिए ग्रहण राहु और केतु नाम राक्षसों की करामात ही है. आर्यभट्ट के सम्बन्ध में जितनी जानकारी हमारे पास आयी, उसका पॉच प्रतिशत भी हम बच्चों को नदी दे पाये. ऐसा विषय भी बाल-साहित्य के अन्तर्गत नहीं लिया गया, जो इस कृषि प्रधान देश में कृषि से सम्बन्धित हो, जैसे बीज की कहानी, मिट्टी की कहानी, दुनिया कैसे बनी, ऐसे विषयों पर बहुत कम बाल-साहित्य है. अन्धविश्वासों को ध्वस्त करने वाला बाल-साहित्य भी नही है. आज भी जादू-टोना, भूत-प्रेत की कहानियॉ, बाल पाकेट बुकों के अन्तर्गत प्रकाशित होती है. साहस के नाम पर मैंने कुछ हलके और भद्दे ढग की जासूसी कहानियां बच्चों की पुस्तकों में देखी है. इन सबका प्रभाव बाल मस्तिष्क पर क्या पड़ेगा, इसे सहज ही समझा जा सकता है.

फिर अभी तक जो बाल-साहित्य आया है, वह नगरीय बालकों की मानसिकता को ध्यान में रखकर लिखा गया है. अस्सी प्रतिशत बच्चो का निवास गांवो में है, उन गांवो की परिस्थितियों से वह साहित्य अछूता है. उनमें न तो वहॉ की मिट्टी की सुगन्ध है और न सूनी झोपड़ियों का हाहाकार.

विषय और वस्तु के सन्दर्भ कों हमने बहुत ही अधिक अछूता छोड़ रखा है. नेशनल बुक ट्रस्ट ने इस क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण काम किये हैं, निश्चित रूप से वे सराहनीय है, किन्तु अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है.

भाषा की दृष्टि से भी बाल-साहित्य के लेखक का दायित्व कम नही है. किस वय-सीमा के बच्चें का शब्द ज्ञान कितना होगा, इस पर हमारे देश में कभी विचार किया ही नहीं गया, किन्तु पश्चिम में बाल-साहित्य के निर्माण में प्रारम्भिक शर्त बच्चों के शब्द-ज्ञान सम्बन्धी ही रहती है. उदाहरणार्थ, ब्राइट स्टोरी रीडर्स की चर्चा की जा सकती है. यह रीडर्स प्राइमरी से लेकर ग्रेड पॉच तक की है. अंग्रेजी और विश्व के महान ग्रंन्थों का सारांश इनमें है. शेक्सपीयर के नाटकों और क्लैसिकल साहित्य के सारांश से लेकर परियों की कथाओं तक इन पुस्तकों में आया है. इसका ध्यान रखा गया है कि प्राइमरी में पढ़ने वाले बच्चो को जितना शब्द-ज्ञान है उसी के भीतर उनकी सभी प्राइमरी की पुस्तकें लिखी जाए. ज्यों-ज्यों शब्द-ज्ञान बढ़ता चलता है, त्यों-त्यों पुस्तकों की भाषा ग्रेड के अनुसार प्रौढ़ एवं प्रांजॅल होती जाती है. 'ब्राइट स्टोरी रीडर्स' की पुस्तकों के पीछे एक शब्दकोश भी लगा रहता है जिससे स्पष्ट मालूम हो जायेगा कि इस पुस्तक के पढ़ने के बाद बच्चों के शब्द-संसार में कितने शब्दों की वृद्धि होगी. शब्दों के साथ-साथ वाक्य रचना पर भी ध्यान देना आवश्यक है.

बच्चों की मानसिकता के अनुसार ही उनकी भाषा होनी चाहिए. भाषिक संरचना यदि जटिल हुई तो वे विषयवस्तु तक नहीं पहुँच पायेगें. सरलता सहजता, उनकी भाषा की प्रमुख शर्त हैः साथ ही उनमें लघुत्माकता भी होनी चाहिए जिससे बच्चे आसानी से उन्हें पढ़ और ग्रहण कर सकें.

बच्चों की जिज्ञासा का केन्द्र बच्चे ही होते हैं. पहले ज्ञान अपने से बाहर की ओर बढ़ता है, फिर बच्चा अपने आसपास के सम्बन्ध में जानना चाहता है. परिवेश वह जो देखता है उसके सम्बन्ध में वह जानना चाहता है.

पत्नी भाषा

✍ अंग्रेजी भाषा के प्रख्यात पंडित बंगाल निवासी श्री केशवचन्द्र सेन ने लगभग आज से सवा सौ वर्ष पहले ही अपने सुलभ समाचार नामक समाचार पत्र में सन् १८७५ में स्पष्ट शब्दों में भारत की एकता के लिए एक भाषा की आवश्यकता पर जोर दिया था. इस दृष्टि से उन्हेंाने हिन्दी अपनाने पर जोर दिया. श्री सेन की ही प्रेरणा से संपूर्ण भारत को अपनी बात सुनाने हेतु आर्य समाज के प्रवर्तक, गुजरात में जन्में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अधेड़ उम्र में हिन्दी सीखी. फिर तो मीठी हिन्दी भाषा से उन्हें इतना प्यार हो गया कि उन्हेंाने हिंदी में ही ग्रन्थ लिखने तथा भाषण देने आरंभ कर दिये. हिन्दी के नागरी स्वरुप को आर्यभाषा कहकर प्रचार किया गया. जिसके परिणामस्वरुप पंजाब में लगभग सब कन्याएं नागरी पढ़ने लगी तथा उस समय प्रचलित उर्दू पढ़ने वाले पुरूषों को अपने को आर्य सिद्ध करने के लिए विवाह पश्चात नागरी पढ़नी पड़ती. जिससे वे अपनी नागरी हिन्दी बोलती पत्नियों से वार्तालाप कर सकें. इसी कारण पंजाब में हिन्दी को 'पत्नीभाषा' कहा जाने लगा तथा इस तरह से हिन्दी का प्रचार भी बढ़ा.

✍ पूर्ण हिन्दी में सबसे पहली कविता मियॉ अमीर खुसरो की प्राप्त होती है. उनकी भाषा मझी हुई तथा आधुनिक स्वरुप की थी. देखिए-

लाज लपट सब छीनी रे तोसे नैना लगाए के.

० **रचना यादव**, अहमदाबाद

मुसलमान रचनाकारों की हिन्दी सेवा

✍डॉ० एन.एस.शर्मा, मुंबई

इस पावन भूमि की सुनहली मिट्टी बटोरने की आकांक्षा में भारत में यवनों के आक्रमण सातवी शताब्दी से ही आरम्भ हो गये थे. उनके प्रारम्भिक आक्रमणों की धनलिप्सा अन्तिम आक्रमणों में राज्यलिप्सा में परिणत हो गई थी. धीरे-धीरे यहां बसकर उन्होंने अपने मूल देश से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिये थे. अब यहां की जनता के सम्पर्क में आने के कारण उनके लिए यहां की भाषा तथा रहन-सहन सीखना आवश्यक हो गया था. कुछ विद्वानों के मतानुसार मुसलमान शासन के प्रारम्भ में बहुत सा राजकाज हिन्दुओं के हाथ था और ये लोग अपना सब कार्य हिन्दी में करते थे. किसी भी सफल राज्य के लिये देशी भाषा की उपेक्षा करना असम्भव होता है. मुसलमान शासक भी अपनी प्रशंसा सुनने का लोभ संवरण न कर सके और इस प्रकार हिन्दी मुसलमान शासकों की छत्र छाया में भी बराबर पल्लवित होती रही.

हिन्दी खड़ी बोली के रुप में सर्वप्रथम खुसरों की कविता में ही देखते है. संवत १३०० के आसपास की लिखी उनकी पहेलियां और मुकरियां आज भी साहित्य प्रेमियों को गदगद करती है. खड़ी बोली की छटा भी कुछ दर्शनीय ही है-

बाला था सब जग को भाया
बड़ा हुआ कुछ काम न आया
खुसरों कह दिया उसका नांव
अर्थ करो या छोड़ों गांव'

हास्यः खीर पकाई जतन से,
चरख दिया चलाय
आया कुत्ता खा गया,
तू बैठी ढोल बजाय।।

मुकरीः वह आवै तब शादी होय
उस बिना दूजा और न कोय
मीठे लागै वाके बोल
क्यों सखि साजन? ना सखि ढोल।

पहेलीः एक थाल मोती से भरा, सब के सिर पर औंधा धरा।

इस परम्परा में भक्तिकाल ज्ञानमार्गी शाखा के प्रवर्तक सन्त कबीर का नाम भी महत्वपूर्ण है. कबीर चाहे जन्म से मुसलमान न भी हों परन्तु मुसलमान परिवार में पालन पोषण होने के कारण इस्लाम के संस्कारों में वे पूरी तरह रंगे हुए थे. वे हिन्दी के सर्व प्रथम रहस्यवादी कवि थे. उनके काव्य में प्रेम और विरह की तीव्र अनुभूति है. आधुनिक काल ही रहस्यवादी रचनाओं की अपेक्षा कबीर की रचनाओं में अनुभूति का तत्व अधिक है.

कबीर अक्खड़ और व्रिदोही स्वभाव के थे. यद्यपि उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों में मेल कराने का प्रयत्न किया तथापि उन्होंने दोनों ही धर्मो की पोल अच्छी तरह खोल कर धर दी और दोनों ही धर्म के पांखडों और आडम्बरों की उन्होंने जी खोलकर खिल्ली उड़ाई-

काकर पाथर जोड़ कर,
मस्जिद लेई बनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे,
क्या बहरा भयो खुदा,
दुनिया कितनी बावली पत्थर पूजन जाये
घर की चाकी कोई ना पूजै जिहि का पीसा खाये
पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार
ताते ये चक्की भली पीस खाये संसार
माला तेरी काठ की धागे दिये पिरोय
मन में गाती पाप की नाम जपै क्या होय!

कबीर के बाद मलिक मुहम्मद जायसी का नाम आता है. कुतवन, मंझन, नूर मुहम्मद और उस्मान आदि कवि जायसी द्वारा प्रचलित प्रेम मार्गी शाखा के प्रसिद्ध कवि हैं. इन कवियों ने हिन्दुओं

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1. मधुशाला की मधुबाला	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य 10.00
2. अपराध	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य :10.00
3. सुप्रभात	:	दस रचनाकारों का संग्रह	मूल्यः 10.00
4. निषाद उन्नत संदेश	:	लेखकः चौ0 परशुराम निषाद,	मूल्यः 10.00
5. अदभुत व्यक्तित्व	:	लेखकः गोकलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः 10.00
6. रोड इंस्पेक्टर, लघु उपन्यास	:	लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः 20.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखेंः मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
नोटः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सदस्यों को पचास प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी.

की प्रेम गाथाओं को आधार बनाकर अपने सिद्धातों की सुन्दर व्याख्या की है. जायसी ने सर्वप्रथम दोहा चौपाई शैली में लिखने की परम्परा चलाई जिसमें आगे चलकर तुलसी ने अपना 'रामचरित मानस' लिखा. जायसी कृत 'पद्मावत' हिन्दी साहित्य का सुन्दर महाकाव्य है. उनके विरह-वर्णन के आगे बड़े-बड़े महाकवियों के विरह-वर्णन भी फीके लगते है-

पिय से कहअं सन्देसड़ा, हे भौरा। हे काम,
सो धनि विरहै जरि मुई, तेहीक धुआ हम लाग.

सूफी कवियों की वाणी का स्पर्श पाकर संत कवियों का शुष्क रहस्यवाद सरस हो उठा है.

अकबर के सेनापति रहीम खान खाना भी हिन्दी के उत्कृष्ट कवि थे. इनके नीति विषयक दोहे अत्यन्त प्रसिद्ध हैं. हिन्दी के साथ-साथ अरबी-फारसी का भी इनको अच्छा ज्ञान था. इन्होंने संस्कृत छन्दों में भी कविता लिखी है. कहते हैं कि बरवै छन्द को तो इन्होंने ही प्रारम्भ किया था. जीवन की गहरी अनुभूति से युक्त इनकी रचनाएं उच्च कोटि की साहित्य कृतियां है.

बिहारी के दोहे तो रसिकों के हृदय में घाव ही करते थे जबकि रहीम के दोहे सभी को समान रूप से बींधते थे चाहे वे रसिक हों या नीतिज्ञ. इनके श्लेष के सौन्दर्य को निहारिये-

जो रहीम गति दीप की,
कुल कपूत की सोय।
बारे उजियारे रहे
बढ़े अंधेरा होय।।

राम भक्ति शाखा में यद्यपि कोई मुसलमान कवि नहीं हुआ परन्तु कृष्ण भक्त कवियों में रसखान का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है. जन्म से पठान होते हुए भी बाद में ये सच्चे कृष्ण भक्त बन गये. भाषा के परिष्कार और भावों के माधुर्य के कारण किसी समय में ये कवित्व और सवैये रसखान ही कहे जाने लगे थे. सूरदास को छोड़कर अन्य कोई कृष्ण भक्त कवि इनकी तुलना में शायद ही ठहर सकेगा. तन्मयता इनकी रचना का प्रमुख गुण है. देखिये उनकी अभिलाषा-

मानस हों तो वही रसखान
बसों संग गोकुल गांव के ग्वारन।
जो पशु हों तो कहा बस मेरो
चरों नित नंद की धेनु मंझारन
पाहन हों तो वही गिरी को
जो कियो हरी छत्र पुरन्दर धारन
जो खग हों तो बसेरों करों
नित कालिन्दी कूल कदम्ब डारन

संवत १७६४ में सैयद रसलीन ने अगंदपूर्ण नामक पुस्तक लिखी. इनके दोहों में बिहारी जैसे दोहों का सौन्दर्य और चमत्कार पाया जाता है.

इनका अभिय, हलाहल, मदभरे, स्याम और रतनार
नियत मरत झुकि-झुकि जिही चितवन एक बार

इनके अतिरिक्त आलम कवि भी बड़े ही प्रसिद्ध हुए हैं.

मुसलमान कवियों के अतिरिक्त मुसलमान कवयित्रियों ने भी हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में पर्याप्त योगदान दिया है. इनमें शेख, ताज जम्बूनिशा आदि का नाम उल्लेखनीय है. ताज की यह पंक्ति 'नन्द के कुमार कुरवान तेरी सूरत पै, हों तो मुसलमानी हिन्दुवासी हो के रहूंगी मैं, बहुत प्रसिद्ध है.

इनके अतिरिक्त नजीर अकबर वादी, मुबारिक, मीर और हफीजुल खॉ आदि ने कविता करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया. पद्य के अतिरिक्त गद्य साहित्य लेखन में भी मुसलमान कवियों का योगदान कम नहीं रहा. इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' बहुत ही प्रसिद्ध है. जिस समय गद्य का विकास हो रहा था उस समय अंग्रेजों की फूट डालने की नीति सफल हो गई थी और मुसलमानों का हिन्दी के प्रति प्रेम कम होने लगा था. फिर भी राष्ट्रीयता की भावनाओं के फल स्वरूप मुंशी अजमेरी, जहुरबक्श, अख्तर हुसैन, रायपुरी बिलग्रामी आदि ने हिन्दी में लिखना आरम्भ किया.

भक्तिकालीन आन्दोलन में कहीं ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उस समय के साहित्य में हिन्दुओं का ही बोलबाला रहा हो. भजन और भक्तिपरक पदों के रचनाकारों की दौड़ में मुसलमान कवियों की भी सूची काफी लम्बी है. कहीं भी ऐसा विवरण नहीं मिलता जो यह जाहिर करे कि हिन्दुओं ने मुसलमानों को कभी पराया समझा हो या उन्हें प्रताड़ित किया हो.

बांग्ला की वैष्णव पदावली की आख्या जिस महाजन पदावली में भी रही, उसमें मुसलमान रचनाकारों के पद प्रचुर मात्रा में विद्यमान है. वैष्णव दास नाम से गोकुलानन्द सेन के ग्रंथ 'कल्पतरू' में मुसलमान वैष्णव कवियों के पदों का संकलन मौजूद है. मुंशी अब्दुल करीम ने कॅटलॉग आफ मैनुस्क्रिप्ट्स प्रस्तुत की थी जिसमें मुसलमान वैष्णव कवियों के पदों का विशद उल्लेख है. साहित्य-संहिता और पूर्णिमा में भी ऐसे ही पद देखे जा सकते है. १६०५ में ब्रज सुन्दर सन्याल की पुस्तक 'मुसलमान वैष्णव कवि' में इनका संकलन है. साहित्य और संस्कृति में ही हिन्दी और मुसलमानों की साक्षी परम्परा नहीं है अपितु वैष्णव कविता में भी बराबर की साझेदारी रही है. वैष्णव मठों में जहां धार्मिक कार्यो एवं अनुष्ठानों के अन्तर्गत वैष्णव पदावली के स्वर गूंजते थे तो उन वन्दना स्वरों में मुसलमान कवियों के स्वर भी मिले

होते थे. वैष्णव पदावली के मुख्य कवियों में मिर्जा फैयाजुल्ला, कबीर मौहम्मद, सैयद मुर्तजा, फकीर हबीब, चॉद काजी, शाह अकबर, नासिर-महमूद आदि प्रसिद्ध हैं. नासिर महमूद उल्लास के कवि हैं. कृष्ण की रूप शोभा, यमुना तट लीला का वर्णन आवेग मिश्रित स्वरों में करते हैं. वे चकित हैं कि सारस्वरुप भगवान श्री कृष्ण गोष्ट विहार कर रहे हैं. अपने नाम की भणिता के साथ पद का समापन वे इस आशा से करते हैं कि श्रीकृष्ण उन्हें अपने चरणों की शरण का दान देगें. कविता में बृजधुलि का वह रूप है जो बांग्ला की अपेक्षा बृजभाषा के अधिक निकट हैं. महमूद बांग्ला धनितन्त्र के हिसाब से मामूद है

वयस किशोर मोहन भांति
वदन इन्दु जल़द कान्ति
जारू चन्द्रि गुंजा हार
वदने मदन-भातरी।
आगम निगम वेद सारे
लीलाय करत गोठ विहार
नासिर मामूद करत आस
चरणों शरण दान री।।

चॉद काजी कृष्णलीला में मान-मनुहार और उत्कंठा के कवि हैं. राधा कृष्ण को छेड़ती, उनसे मनुहार करती है: "उफ, तुम बॉसुरी बजाना भी नहीं जानते. असमय बजाते हो और मन तुमसे मिले बिना मानता नहीं. जब मैं गुरूजनों के बीच बैठी होती हूँ तो तुम नाम ले-लेकर बांसुरी पर पुकारनें लगते हो, मैं लाज से मरी जाती हूँ."

बांशी बाजानो जानो ना
असमये बाजाउ बांशी परान माने ना।
ज़खम अभि वैसा था कि गुरुजार माझे नाम धरे बाजाउ बांशी, अभि मरी लागे।।

सैयद मुर्तजा के भक्ति पद में आत्म निवेदन की प्रगाढ़ता है. गोपिका का चित विरह-व्याकुल है. इस व्याकुलता के निवारण की याचिका कृष्ण से करती है कि उनके पद की छाया मिले तभी व्याकुलता दूर हो सकती है. कुल-शील सब कुछ कृष्ण के लिये विसर्जित कर दिया अब उसके बिना कैसे उसके प्राण टिके रह सकते हैं. कवि इस आकुलता से स्वयं आकुल है कि कहॉ कृष्ण के चरणों में. हे हरी, सुनो सब को छोड़ कर जीवन-मरण तुम पर ही निर्भर और तुम्हें ही समर्पित रहा.

सैयद मुर्तजा मने कानूर चरणो
निवेदन शुनो हरि।
सकल छाड़िया, रहिलू तुआ लागिया
जीवन मरण भरि।।

शाह अकबर कृष्ण के साथ-साथ कृष्ण भक्त का भी लीला गान करते है. कीर्तन रत गौरांग महाप्रभू उनके प्रिय काव्य विषय हैं. उनकी भाषा हिन्दी के मध्यकालीन कवियों की काव्य भाषा के अधिकाधिक निकट है.

जियो, जियो रे मेरे मन चोरा गोरा।
आपहि नाचरा आपन रसे मोरा।।
खोल कर ताल बाजे झिझि झिझियां
आनन्दे भगत नाचें लिकि-लिकि लिकिया
पद दुई चारिचलू नटि नटि नटिया
किर नाहि होएत आनंद मातु लिया
ऐसन पहु के जात बलिहारी।
साह अकबर तेरे प्रेम गिरवारी।।

अलाउदीन के समय हिन्दी को पर्याप्त संरक्षण मिला. शेरशाह, अकबर, जहांगीर और शाहजहां के पुत्र की भी हिन्दी में बेहद रूची थी. यद्यपि आधुनिक मुसलमान हिन्दी लेखकों को रीतिकालीन एवं भक्तिकालीन कवियों के समान ख्याति प्राप्त नहीं हो सकी तथापि आज उ़र्द के अनेक विद्वान हिन्दी में लिखने का अच्छा प्रयास कर रहे है. ●

हिन्दी भाषा के कुछ रोचक तथ्य

✍ डॉ० पद्याकर द्विवेदी जी ने अपने एक लेख में लिखा है कि प्राचीन काल में हमारे देश को भारत कहा जाता था. पश्चिमी विदेशी एवं मध्य एशिया के लोग उनकी भाषा में 'स' का उच्चारण 'ह' करते थे उदाहरण के लिए सप्ताह को हफ्ता, असुर को अहुर. मध्य एशिया तथा पश्चिमी विदेशी यवन के ये व्यापारी इसी कारण 'सिन्धु' नदी के पूर्वी भाग को 'सिन्ध' नदी के कारण हिन्द कहने लगे तथा यहॉ के रहने वालों को हिन्दवासी तथा हिन्दुओं की भाषा को हिन्दवी, जो बिगड़कर हिन्दी कहलाने लगी.

✍ औरंगजेब के पुत्र मुहम्मद आज़मशाह ने अपने पिता औरंगजेब के पास दो प्रकार के आम भेजकर उनका नामकरण करने को लिखा. औरंगजेब ने उन आमों का नाम फारसी या अरबी में न रखकर संस्कृत में सुधारस रसना विलास रखा.

✍ चौदहवी शताब्दी में मुगल बादशाह मोहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली से अपनी राजधानी दक्षिण में दौलताबाद बदली तो साथ में गई जनता में शामिल दुकानदार, जनता, सैनिक आदि के स्थानीय जनता के बीच हुए सम्पर्क से हिन्दी का जन्म हुआ. हैदराबाद की हिन्दी को दक्खिनी हिन्दी कहते है. तुगलको के बाद दक्षिण के सुबेदार ज़फरखॉ ने जब बहमनी राज्य की स्थापना करी तब स्थानीय भाषाओं के साथ अरबी और फारसी मिलाकर एक व्यवहार की भाषा बन गई और राजकार्य में प्रयोग किया जाने लगा. इस भाषा को हिन्दवी जो बाद में दक्खिनी कहलाने लगी.

रचना यादव, अहमदाबाद

व्यंग्य

समाज सुधार में जूते का योगदान

सत्यवान नायक, भिलाई, छत्तीसगढ़,

समाज के सुधार व शुद्धिकरण में कई संत महात्माओं का बड़ा योगदान रहा है. आपने कभी विचार किया है कि समाज के शुद्धिकरण में जूते का भी योगदान हो सकता है. क्या आप जानते है? एक जूता भी समाज सुधारक की भूमिका बखूबी निभा सकता है. अब जरा अपने जूते को प्यार से निहारिये और चिंतन कीजिये तो आप इसके विभिन्न उपयोग व गुणों से परिचित हो जायेंगे. चुनाव का मौसम आते ही जूते समाज सुधारक की भूमिका में दिखाई देने लगते है. चुनाव में पुराने से पुराना मॉडल जूता भी बिक जाता है और हर गली मुहल्ले से फटे पुराने जूतों की डिमांड भी बढ़ जाती है. नेताओं के पंचवर्षीय दर्शन के लिए आतुर जनता करे भी तो क्या करे? नेताओं के आश्वासन से त्रस्त जनता हिसाब चाहती है और नेता अगले पॉच वर्ष के लिए वोट चाहता है. जनता और नेता के अंतर्द्वन्द के चलते नेता और जूते का ऐसा संबंध बन जाता है, जैसे 'हम बने तुम बने एक दूजे के लिए'. चुनाव के मौसम में जुते का योगदान देखते ही बनता है. यह बिगड़े से बिगड़े नेता को भी सही रास्ते पर लाने की क्षमता रखता है.

यूं तो दोस्तों आपने अपने जीवन में जूता जरूर पहना होगा या पहनाया होगा, इसलिये आप जूते से परिचित भी होंगे. परंतु कभी आपने सोचा है कि अगर जूता नहीं होता तो आपके कितने काम रूक जाते? जी नहीं, आपने इस बारे में कभी गंभीरता से नहीं सोचा. आप तो बस इतना जानते है कि जूता तो बस जूता है. इसमें क्या खास बात है पैर घुसाया लैस बांधा और चल दिये. यह आपके पहनने के काम आता है परन्तु उनसे पूछिये जिनके ये खाने के काम आता है.

अब जरा अपने जूते को प्यार से निहारिये और चिंतन कीजिये तो आप इसके विभिन्न उपयोग व गुणों से परिचित हो जायेंगे.

वैसे आज कई प्रकार के जूते मार्केट में उपलब्ध है. कोई चलने में हल्की है तो कोई चलाने में. कोई पहनने में सुविधाजनक है तो कोई खरीदने में असुविधाजनक, कोई टिकाऊ है तो कोई फिकाऊ है. कम्पनी अलग-अलग होते हुये भी सभी जूते, जूते होते हैं न हिन्दू न मुसलमान, न सिख न ईसाई.

आइये दोस्तों मैं आपको जूते से मिलवाता हूँ. वैसे तो जूते पर पूरी पी.एच.डी. की जा सकती है. इस सुविधा के लिये छत्तीसगढ़ में खुले किसी भी झोला छाप युनिवर्सिटी से संपर्क कर सकते है. मैं आपको जूते के जाति, धर्म, गुण, दोष तथा बहुआयामी उपयोग के बारे में बताऊँगा. जिससे आपको जूते पहचानने में कभी गलती नहीं होगी.

वैसे आज कई प्रकार के जूते मार्केट में उपलब्ध है. कोई चलने में हल्की है तो कोई चलाने में. कोई पहनने में सुविधाजनक है तो कोई खरीदने में असुविधाजनक, कोई टिकाऊ है तो कोई फिकाऊ है. कम्पनी अलग-अलग होते हुये भी सभी जूते, जूते होते हैं न हिन्दू न मुसलमान, न सिख न ईसाई. इनका काम आपके पैरों की सेवा करना है. परंतु अब ये अलग बात है कि आप इससे क्या सेवा लेना चाहते है? इस पर इसकी उपयोगिता निर्भर करती है. जूता यूँ तो पुलिंग है परंतु इसका स्त्रीलिंग भी होता है जिसे हम जूती कहते है.

आज दूरदर्शन पर तो जूते इतना गुणगान किया जाता है कि बस लगता है कि दूरदर्शन जूते के लिए बनी है. यूँ भी दूरदर्शन के घटिया सरकारी कार्यक्रमों व प्रसारणों को दिखा कर दर्शकों को बोर में करने में कोई कसर नहीं छोड़ता. झेलने की तमाम सीमायें टूटने लगी है. वह दिन दूर नहीं जब दर्शक भी जूता लेकर खड़ा हो जायेगा और उसी दिन से दूरदर्शन में सुधार आने लगेगा. माफ करना मित्रों आपको जूतों की दुनिया से परिचित कराते-कराते थोड़ा भटक गया था. रूकावट के लिए खेद है.

जूते से हमारी औकात का पता चलता है. जितना बड़ा आदमी उतना चमकदार जूता. कभी-कभी तो जूता आदमी की पहचान बन जाती है. घर के बाहर जूते को देखकर हम आये हुए मेहमान को पहचान जाते है. जूते से आदमी के जेब की आर्थिक स्थिति और मानसिकता का भी पता चलता है.

जूते की ऐतिहासिकता बिना किसी प्रमाण या खुदाई के सदैव निर्विवाद रही है. जूतों का प्रयोग प्राचीन काल से ही मुहावरों में होता आया है. जैसे- चांदी का जूता मारना, जूता घिसाना, जूतम पैजार, मियां की जूती मियां का

सर आदि-आदि. अतः जूते की सार्वभौमिकता व धर्मनिरपेक्षता स्वयं सिद्ध है. किसी जूते पर कभी विवाद नहीं हुआ कि ये मेरे भगवान का या ये मेरे ईसा का या मेरे अल्लाह का जूता है. अतः जूता एक आदिकाल से चली आ रही निर्विवाद वस्तु है.

आज जूते सिर्फ पहनने के काम ही नहीं बल्कि अस्त्र-शस्त्र के रूप में भी काम में लाये जाते हैं. नेताजी का भाषण पसंद नहीं आया, कवि की कविता पसंद नहीं आयी, बस निकालिये और. ...... अब तो ऐसे जूते भी मिलने लगे हैं जो कि निकालने में भी आसान और साथ ही चलाने में भी. इसी प्रकार एक नेताजी की नेतागिरी तो नहीं चली परन्तु उन्होनें भाषण दे-देकर जूते की दुकान खोल ली.

आज जूते सिर्फ पहनने के अलावा अस्त्र-शस्त्र में भी काम आते है. नेताजी का भाषण, कवि की कविता पसंद नहीं आयी, बस निकालिये और....अब तो निकालने व चलाने में आसान जूते भी मिलने लगे है. लड़कियों के लिये तो ये आत्मरक्षा का प्रमुख औजार है.

लड़कियों के लिये तो ये आत्मरक्षा का प्रमुख औजार है. वैसे आप चाहें तो चाकू की जगह जूता रख सकते हैं. चाकू रखने के जुर्म में थाने में बंद हो सकते हैं परंतु जूता रखने में आपको कानून सजा नहीं दे सकता. मैं पूरे दावे के साथ कह सकता हूँ कि जूता आपको पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम है.

इसी प्रकार एक दिन मनचले मजनू ने अपनी लैला को छेड़ दिया. बस फिर क्या था. लैला और लैला के शुभचिंतको ने मजनू पर जूतों की झड़ी लगा दी. आखिर मजनू ने लैला को अपनी बहन मानकर जूतो से जान बचाई.

जूतों के कई स्वरुप हमारे सामने है. जैसे हमारे हास्य कवि, व्यंगकार अपनी रचनाओं में जूते का पूर्ण सद्पयोग करते हैं. जिन्हें हम चाहकर भी सीधे-सीधे जूते नहीं मार सकते, उन्हें साहित्कार अपनी रचनाओं के माध्यम से घुमा-घुमाकर जूता मारते हैं. इस प्रकार समाज के शुद्धिकरण में जूते का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है.

जूते की हमारी राजनीति में भी गहरी पैठ है. आज विधान सभा से लेकर संसद तक जूते की पहुॅच है. इसका महत्व इस बात से लगा सकते हैं कि देश तो देश, विदेश की संसद मे भी जूते का ससम्मान प्रवेश हुआ वो भी जापान जैसे देश में, जहॉ संसद के भीतर जम के जूतम-पैजार हुई. हमारे यहॉ भी विभिन्न स्तरों पर इसका चलन बढ़ रहा है. हमारे विधायकों व सांसदों ने इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए इसका भरपूर उपयोग किया है. चुनाव के मौसम में हर नेता एक दूसरे पर जूता उछालते दिखाई देता है.

अगर हमारे राजनैतिक अखाड़ों का इसी प्रकार जूताकरण होने लगा तो जूते का भविष्य खतरे मे पड़ सकता है. भविष्य में जूते की मारक क्षमता को देखते हुये, इसका प्रवेश विधानसभा व संसद में प्रतिबंधित कर दिया जायेगा. साथ ही जूता लेकर चलने पर पाबंदी लगा दी जायेगी. अगर हमारी संस्कृति व तहजीब का इसी तरह जूताकरण होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब जूता लेकर चलना या जूता उठाकर चलना संज्ञेय अपराध घोषित कर दिया जायेगा. आपके साथ जूता देखते ही आपको गिरफ्तार कर लिया जायेगा. जूता तो हमारे व्यक्तित्व का एक आईना है इसे अवश्य चमकायें परंतु हाथ में लेकर नहीं.

जूता के इस बहुमुखी व्यक्तित्व और बहुआयामी उपयोग को देखते हुये सरकार ने जूता का उदारीकरण व निजीकरण करने का फैसला कर लिया है. अब कोई भी किसी पर कभी भी जूता चला सकता है.

आज के युवा वर्ग के लिये जूता विशेष महत्व की चीज है. अगर जूता नहीं होता तो नौकरी के लिए उसे अपनी एड़िया घिसनी पड़ती. अब वो जूता घिसता है. अंत में जब घिसते-घिसते जूता फट जाता है परंतु नौकरी नहीं मिलती, तो ये फटे, निराश व हताश जूते गुमराह होकर धीरे-धीरे आतंकवाद और अपराध की राह पर चल पड़ते है.

इसलिये सरकार से अनुरोध है वो इन घिसे-पिटे व फटे जूतों की ओर विशेष ध्यान दें. अगर समय रहते इन जूतों की मरम्मत नहीं की गई तो ये जूते गलत राह चुन लेंगे. जिसका परिणाम भयावह हो सकता है. जिस दिन ये हताश व निरश युवा पीढ़ी अपने इन फटते जूतों को पैर की जगह हाथ में लेकर अधिकार मांगने लगेगा, रोजगार मांगने लगेगा, तब शायद देश के कथित ठेकेदारों का जीना दूभर हो जायेगा.

मेरे देश के कर्णधारों, आज युवा पीढ़ी के जूतों की दशा देखो. उसका पुराना फटा हुआ जूता उसकी कहानी बयां कर रही है. अब वक्त आ गया है कि हम इन जूतों की दशा व दिशा सुधारें, सही राह दिखायें. इन्हें गुमराह होने से बचायें. इसमें ही राष्ट्र का विकास निहित है.

मंगलसूत्र

अभय कुमार ओझा, खगड़िया, बिहार

"खट्..खट्...खट्!"आधी रात को दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर सुखिया का दिल धड़कने लगा और वह सोचने लगी-"हे भगवान, अब वे क्या ले जाएँगे? सब गहने तो एक-एक कर छीन ले गये. अब तो यही एक मात्र सुहाग की निशानी...."

"खट....खट....खटा"पुनः दरवाजा खटखटाया गया. अब वह देर नहीं कर सकी और डर से दरवाजा खोल दिया. उसका पति श्रीकांत धड़धड़ाते घर में घुसा और मंगलसूत्र मॉगने लगा. सुखिया ने जब देने से इंकार किया तो जुए के नशे में चूर उसके पति ने उसकी पिटाई की और गले से मंगलसूत्र खींचकर चलता बना.

सुखिया के ऑखों से ऑसू बहने लगे. वह सोंचने लगीं-"मॉ-बाप ने बड़े प्यार से मेरा नाम सुखिया रखा होगा. उन्हेंने सोंचा होगा कि उनकी बेटी जीवन भर सुख भोगेगी, राज करेगी. लेकिन भाग्य में होगा तब तो. नाम रखने से क्या होता है? आज मॉ-बाप देखने तो नहीं आते कि मैं उनकी वही लाड़ली बेटी सुखिया हूँ और विवाहोपरांत कितनी 'दुखिया' बन गई हूँ. आज विवाह हुए दो वर्ष गुजर गए. किस दिन मैं सुख का मुँह देखी हूँ? जिस दिन से इस घर में पैर रक्खी हूँ, उसी दिन से बेवकूफ बनाकर ये मेरे सब पैसे हड़पते गये. मैंने उन्हें अपना पति समझकर देने से कभी इंकार नहीं किया था. धीरे-धीरे एक-एक करके सब गहने ले गये. जब मुझे मालूम हुआ कि ये जुआ खेलते हैं तो मैं इनको खुब समझाई थी. बदले में पहले इनकी डॉट-फटकार सुनती रहती और अब तो आए दिन मारपीट करने लगे हैं. रात-रात भर जुआ खेलते है. यह भी नहीं सोचते कि घर में पत्नी अकेली होगी. पैसे घटने पर देर रात को घर आते है और मारपीट कर जो मन में आता है, ले जाते है......."

.....मनोज भी तो एक इंसान था जो अपने परिवार की भलाई के लिए अपने प्यार का बलिदान कर दिया था. मुझे भी मेरे परिवार की इज्जत के लिए प्यार का बलिदान करने हेतु प्रेरित किया था."

फिर विचारों को झटका लगा. पुरानी बीती बातें सुखिया के मन रुपी पर्दे पर सिनेमा की झलकियों की तरह एक के बाद एक नजर आने लगती है... १८-२० वर्ष पहले एक बंगाली परिवार हमारे पड़ोस में किराया का मकान लेकर रहने लगा. उस परिवार में पति-पत्नी के अलावे दो लड़के और दो लड़कियॉ थी. उस समय मैं पॉच वर्ष की रही हूँगी. मेरे परिवार और उस परिवार में निकटता बढ़ी. मैं और उनलोगों का छोटा लड़का मनोज एक साथ ही खेलते थे. उन लोगों का अलग समाज था. मनोज हम उम्र था इसलिए उसका और मेरा विचार मिलता था. हमलोग 'कैरम' या 'लूडो' खेलते थे. कभी-कभी हम लोग आपस में झगड़ने लगते थे. मॉ हमलोगों को समझा-बुझा कर शांत कर देती थी. दिन बीतते देर नहीं लगती. इसी तरह से खेलने-झगड़ते मैं तेरह वर्ष की हुई और मनोज पंद्रह का. मनोज कहीं घूमने जाता तो मुझे भी साथ चलने का कहता. मैं मॉ से पूछती तो वह अब मना करती और डॉटती हुई कहती-" अब तू बच्ची नहीं हो. जवान हो रही हो. अब बचपना छोड़ो. लड़को के साथ तुम्हारा घूमना-फिरना ठीक नहीं है."

उस समय मुझे यह नहीं समझ मैं आ रहा था कि मॉ मुझे लड़को के संग घूमना-फिरना क्यों मना करती है.

एक बार मनोज अपने परिवार के साथ सिनेमा देखने जा रहा था. उसने मुझे भी साथ चलने को कहा. मैं मां से पूछी तो वह मुझे डॉट दी और मुझे जानो नहीं दी. मैं रोती हुई मनोज से बोली थी-"तुम सिनेमा देखकर आना तो मुझे उसकी कहानी सुना देना."

मनोज सिनेमा देखकर आया और मुझे उसकी कहानी सुनाई. वह उस दिन से उस सिनेमा की हीरोइन की तुलना मुझसे करने लगा था-"सुखिया, तुम हू-बहू उस सिनेमा की हीरोइन लगती हो. तुम उसी की तरह गोरी और सुन्दर हो. उसकी नाक, कान और ऑखें तुमसे मिलती है. तुम उसकी तरह ही चलती हो." मनोज के मुँह से अपनी बड़ाई सुनकर मैं मन ही मन खुश होती लेकिन ऊपर से अपने को कुरुप कहती थी.

धीरे-धीरे पॉच वर्ष और बीत गये. मैं अठ्ठारह वर्ष की हुई और मनोज बीस वर्ष का. अब मॉ हम लोगों को 'कैरम' या 'लूडो' खेलते देख लेती तो मेरा हाथ पकड़कर उठा ले जाती और डॉटती. अब तो मॉ मनोज से मिलना-जुलना भी बदं करवा दी थी. जब मनोज से मिलने को मन करता तो कॉलेज या बाजार जाने के बहाने घर से निकलती और मनोज से किसी पार्क में बैठकर घंटो बातें करती.

वह मुझे खुश रखने के लिए मैं जो कहती उसे करने के लिए तैयार हो जाता था. एक दिन मैं उससे बोली थी-"मुझे बिजनेस-मैन बहुत अच्छे लगते हैं. किसी की गुलामी नहीं करना पड़ता." वह बिजनेस-मैन बनते के चक्कर में दर-दर की ठोकर खाने लगा था. मिली नौकरी पर लात मार दी थी उसने. हजारो-हजार रुपयों का

नुकसान किया था. उसके पिताजी उसकी इच्छा पर झुकते गए. हजारों रुपये उसके व्यापार के लिए दिये लेकिन घाटे के सिवा कभी लाभ नहीं हुआ. इस तरह से उसके पिताजी की जमा पूंजी खत्म हो गई. कुछ दिनों के बाद उसके पिताजी रिटायर हो गये. तब उस परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी. उसके पिताजी ने उसको बहुत समझाया था कि वह नौकरी कर ले लेकिन उसे किसी की अधीनता स्वीकार नहीं थी. उसे तो व्यापार का शौक चढ़ गया था. हजारों रुपयों की नौकरी उसके मन को नहीं भा रही थी.

धीरे-धीरे मनोज और मैं एक-दूसरे के और नजदीक होते गए. हम रोज पार्क या मंदिर में मिलते और साथ जीने-मरने की कसमें खाते. एक दिन हम लोगों ने निर्णय लिया कि अपने-अपने घरों में एक दूसरे से प्यार की बातें कह दी जाय.

मैं अपनी मॉ से मनोज की चर्चा की तो उन्होंने मुझे बहुत भला-बुरा कहा. बाद में समझाई थी-"अपने खानदान की इज्जत के लिए तुम्हारी शादी दूसरे विरादरी में नहीं कर सकती. मनोज अपने बिरादरी का रहता तो सोचा जा सकता था. तुम्हारे लिए अपने कुल-खानदान की मान-मर्यादा मिट्टी में नहीं मिला सकती. तुम्हारे लिए एक अच्छा और कमाऊ लड़का देखी हूँ. तुम्हारी शादी उसी से तय कर रही हूँ और तुम्हें उसी से विवाह करना होगा. मैं तुम्हारी मॉ हू, दुश्मन नहीं. तुम्हारी भलाई-बुराई सोचकर ही कुछ करुंगी" मॉ की बातें सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ था.

उसी दिन शाम को मैं मनोज से पार्क में मिली और रोती हुई मॉ के विचार कह दी थी. मनोज ने एक लंबा श्वास लिया और अपनी रामकहानी कहने लगा-"मेरे परिवार पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है. मैं पिताजी से जब तुम्हारे विषय में कहा तो उनके ऑखों से ऑसू निकल पड़े और उन्होंने 'दादा' की चिट्ठी पढ़ने को दिया. दादा ने लिखा था-'मैं इन्जीनियरिंग की परीक्षा पास कर लिया हूँ और यही एक लड़की डाली से शादी कर लिया हूँ. मुझे यहॉ की नागरिकता, भी मिल गई है. हम दोनों खुश है. अब मुझे भारत लौटने की कम सम्भावना है.' इस तरह से दादा ने परिवार से मुँह मोड़ लिया है. पिताजी ने कहा-'मैं अपनी जीवन भर की कमाई तुम्हारे दादा को अमेरिका भेजने और तुम्हारे बिजनेस में स्वाहा कर दिया हूँ. तुम्हारे दादा से मुझे बहुत आशाएँ थी. सभी आशाओं पर पानी फेर दिये तुम्हारे दादा ने. तुम्हारा बिजनेस हमेशा घाटे में ही रहा. मेरी जमा पूँजी खा गई तुम्हारी बिजनेस ने. तुम्हारे विवाह के लिए एक से एक अच्छे लोग आ रहे है. वे तुम्हें कोई ना कोई लाइन पकड़ा देगें. कहीं नौकरी लगवा देंगे. तुम्हारा जीवन खुशहाल हो जाएगा. याद रखो-भूखे पेट प्यार नहीं होता. तुम कमाओगे नहीं तो सुखिया को क्या खिलाओगे और खुद क्या खाओगे? केवल प्यार से तुम्हारा और सुखिया का पेट भर जाएगा क्या? तुम्हारे दादा को तो मैं पढ़या-लिखाया और बड़ा आदमी बनाया. तुम्हारे व्यापार के लिए हजारों-हजार रुपया पानी की तरह बहाया. आज मैं कंगाल हो गया हूँ. क्या तुम्हारा यह धर्म नहीं है कि मुझे, अपनी मॉ का और अपनी दोनों बहनों का भार चलाओ? क्या तुम यह देखना चाहते हो कि तुम्हारा परिवार गली-गली भीख मॉगता फिरे?" उनके लगातार सवाल करने पर मैं किकर्त्तव्यविमुढ़ हो गया और बिना कोई उत्तर दिये तुमसे मिलने चला आया हूँ. इतना कहकर उसने गहरी सॉस ली और मुझे समझाने लगा था-"यदि मैं उससे सच्चा प्यार करती हूँ तो मुझे उस प्यार की बलि चढ़ानी होगी." वह भी तो कर्त्तव्य की वेदी पर अपने प्यार का बलिदान कर रहा था. मेरी मॉ भी समाज में परिवार की इज्जत को ध्यान में रखती हुई हमारी शादी से खुश नहीं होती. इसलिए मैंने भी अपने प्यार का बलिदान कर दिया था.

कुछ दिनों के बाद मनोज की शादी हो गई. उसे नौकरी भी मिल गई थी. मेरी शादी मेरी मॉ की मर्जी से हुई थी-खुब धूमधाम से. दुल्हे राजा कमाऊ थे. सुखिया को सुख मिलने वाला था, लेकिन....

"खट्....खट्....खट्." दरवाजा फिर खटखटाने की आवाज आई. सुखिया के विचारों की लड़ी टूटी. डरते-डरते उसने दरवाजा खोला तो सामने राक्षस समान हँसते हुए श्रीकात को पाया. वह सुनी थी कि पति देवता होता है लेकिन यहॉ तो वह देवता नहीं साक्षात् राक्षस लग रहा था. वह घबड़ाई हुई पूछी-"अब क्या ले जाइएगा? अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है. सब गहने तो ले ही गए. मेरे सुहाग की आखिरी निशानी मंगलसूत्र भी नहीं छोड़े."

"अरे हरामजादी! जब सुहाग है ही तो उसकी निशानी की क्या जरुरत?" यह कहकर श्रीकांत लड़खड़ाने कदमों से सुखिया को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा. सुखिया डर से पीछे हट गई तो शराब के नशे में चूर उसका पति श्रीकांत धड़ाम से मुँह के बल गिर गया. सुखिया किकर्त्तव्य हो गई और उसको होश में लाने के लिए उसका सिर सहलाने लगी.

++++++++++++++++++++++

बाजारवाद से उत्पन्न स्थितियॉं और साहित्यिक पत्रकारिता

नई दिल्ली, ५वें साहित्यिक पत्रकारिता दिवस समारोह में वक्ताओं ने साहित्यिक पत्रिकाओं के सामाजिक व राष्ट्रीय महत्व को रेखांकित करते हुए शासन-प्रशासन व प्रबुद्ध एवं समर्थ समाज द्वारा समुचित प्रोत्साहन देने पर बल दिया. क्योंकि ऐसा करके ही बाजारवादी, उपभोक्तावादी, प्रदूषणकारी सांस्कृतिक शक्तियों से मुकाबला कर पाना संभव हो सकता है. अ.भा. राष्ट्रभाषा विकास संगठन तथा आईसीसीआर के सुयक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में व्यक्त किए. वक्ताओं में डॉ.महीप सिंह, श्री बालस्वरुप राही, डॉ. धर्मपाल आर्य, डॉ. कौशलेन्द्र पांडेय, पवनकुमार वर्मा, डॉ. रत्नाकर पांडेय, डॉ. भीष्मनारायण सिंह, डॉ. श्याम सिंह शशि सहित अनेक संपादकों ने अपने अनुभवपरक विचार रखें.

इस अवसर पर रमेश सोबती के निबंध संग्रह 'गंतव्य की ओर', महेन्द्र प्रताप सिंह के उपन्यास 'प्राश्यचित', डॉ. यशपाल सिंह के काव्य संग्रह 'शब्दों की सतह', सहित विकास मिश्र द्वारा संपादित 'प्रेरणा पुंज कलमकार-उमांशकर मिश्र का लोकार्पण किया गया.

लखनऊ से सुदर्शन श्याम संदेश के संपादक श्री राधेश्याम दुबे ने डीएवीपी में व्याप्त भ्रष्ट्राचार और शोषण का उल्लेख करते हुए शासन से डीएवीपी के नियमों को सरल बनाने की मांग की. पटना से आये हरित वंसुधरा के संपादक श्री मेहता नगेन्द्र सिंह ने अपने अनुभव बताये कि किस प्रकार वे अपनी पेंशन से पत्रिका का प्रकाशन करते है. यदि शासन पर्याप्त सहयोग करे तो यह कार्य और सहज व

✍ साहित्यिक पत्रिका निकालना एक जुनून है, पागलपन है. यह पागलपन देश व समाजहित के लिए बहुत आवश्यक है.
✍ डीएवीपी में पर्याप्त मात्रा में भ्रष्ट्राचार और शोषण व्याप्त है.
✍ विज्ञापन किसी भी प्रकाशन की रीढ़ होते है. दैनिकों का तो यह हाल है कि यदि विज्ञापन मिल जाये तो प्रमुख समाचार ही नहीं, उनका वश चले तो संपादकीय को भी हटा दें.

विस्तृत हो सकता है.

विशिष्ट अतिथि आई.सी.सी.आर. के महानिदेशक व साहित्यकार श्री पवन कुमार वर्मा ने उमांशकर मिश्र के ५८वें जन्मदिवस पर शुभकामनाएं दी. गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व आर्य समाज के अनेक पत्रों के परामर्शी डॉ. धर्मपाल आर्य ने कहा कि बाजारवाद से आज सभी त्रस्त हैं. मुनाफाखोरी के इस दौर में सांस्कृतिक मूल्य ध्वस्त हो रहे हैं. अमेरिकी सभ्यता का अनुसरण करने वाले हिन्दी के अखबारों व पत्रिकाओं को सोचना चाहिए कि उनकी नैतिक जिम्मेदारी क्या है. साहित्यिक पत्रिकाएं जीवटता का प्रमाण है, साथ ही भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की वे सुरक्षा भी कर रही है.

प्रख्यात कथाकार डॉ. महीप सिंह ने कहा कि साहित्यिक पत्रिका निकालना एक जुनून है, पागलपन है. यह पागलपन देश व समाजहित के लिए बहुत आवश्यक है. इसके दुख-सुख भी व्यक्गित ही होते है. किंतु अपेक्षा अवश्य की जाती है कि समाज और सरकारें साथ दें.

दैनिक हिन्दुस्तान के पूर्व संपादक श्री बालस्वरूप राही ने कहा कि विज्ञापन किसी भी प्रकाशन की रीढ़ होते है. दैनिकों का तो यह हाल है कि यदि विज्ञापन मिल जाये तो प्रमुख समाचार ही नहीं, उनका वश चले तो संपादकीय को भी हटा दें. यदि आदर्श जीवन मूल्यों का संरक्षण करना है तो साहित्य और पत्रिकाओं को जैसे भी हो, जीवित रखना होगा.

वरिष्ठ पत्रकार श्री सतीश सागर ने सुझाव दिया कि साहित्यिक पत्रिकाओं को सामग्री की स्तरता बनाये रखनी चाहिए. उन्होंने भविष्य के खतरों की ओर संकेत किया कि विदेशी अखबार समूह भारत में पांव पसारने को आतुर है, जाहिर है वे उसके साथ अपनी सभ्यता और संस्कृति का विषैला प्रभाव भी छोड़ेगें.

हिन्दी अकादमी दिल्ली के पूर्व सचिव डॉ. रामशरण गौड़ ने एक प्रसंग के माध्यम से बताया कि परिस्थितियां विपरीत रहती आई है व आगे भी रहेंगी. समाज व देशहित के लिए साहित्यिक पत्रकारिता एक ऐसा वरदान है जो हमारे जीवन मूल्यों की सुरक्षा करने की क्षमता रखती है.

सुविख्यात शिक्षाविद व पूर्व सांसद डॉ. रत्नाकर पांडेय ने कहा कि मैनें सूचना मंत्री प्रियरंजन दास मुंशी का ध्यान डीएवीपी द्वारा अपनाई जा रही गलत नीतियों की ओर आकर्षित कराया है और उनसे आग्रह किया है कि वे साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए सरलतम नियम व औपचारिकताएं निर्धारित करने के लिए निर्देश दें.

समारोह का संचालन डॉ. उमाशंकर मिश्र व हरिपाल सिंह ने किया.

कहानी

नीले फ्रेम वाली खिड़की

✍डॉ.कौशलेन्द्र पाण्डेय ,लखनऊ,उ.प्र.

सात फेरे क्या किये.... दोनों ही एक दूसरे के होकर रह गये. ज्यों ही वह पिछुवारे के झरोखे से झांकती, हल्की सी हवा में झूमते और आसपास की पत्तियों को चूमते फूलवाड़ी के फूलों के समीप धीरे-धीरे पहुंचते हुए कोई दिखता; वह खिलखिलाते मन से दरवाज़े तक पहुंचती, खनकदार हाथों से किवांड़ खोलती तो लोचन बाहर खड़ा हुआ होता! घंटी के बटन पर उंगली तक न रख पाता वह! ... फिर क्या, परस्पर युगयुग के बिछड़े हुए से मिलते, बाहों में जकड़ लेते सीनों को. ..अंत में देर रात तक बतियाते, हँसते और खिलखिलाते... सुबह सुबह सूरज का रथ चले जाने के कुछ ही समय बाद साथ-साथ जागते भी.

एक दिन..... सबेरे-सबेरे लोचन अध ीर हो उठा, पलक को चिपका लिया अपनी छाती से, अनन्तर हृदयों की ध ड़कने आहिस्ता-आहिस्ता सामान्य होने पर बोला-'सूरज की चुस्ती-फुर्ती और वक्त की पाबन्दी का कोई जवाब नहीं. क्यों और कैसे?.... पलक ने पूछा, फिर उसके कंड से लटककर लता सी झमूने लगी. लोचन ने उत्तर दिया, 'हम और तुम... जितना ही प्रयास करते हैं कि प्रातः कुछ जल्दी उठ जाया करें, हमसे पहले ही उठ जाता है ये... फेंककर अपनी चादर...! रूप का लोभी है ये, भंवरे वाली प्रवृत्ति है इसकी क्योंकि रोज़ ही हमारे जागने से पहले नीम के पेड़ की किसी साख पर बैठा बैठा अपनी किरणों से छुछुवाने लगता है तुम्हारे अंग-प्रत्यंग! आज से आंगन में नहीं सोयेंगे हम.

ऐसी बात नहीं लोचन! वह तो समग्र प्रकृति और हमने-तुममें जीवन का संचार करने के निमित्त आता है; रोज़ रोज़ दिन भर बांटता रहता है अपनी सिद्धियां... और ऊर्जा! रात्रि में कही बेचारा अपनी शक्ति का पुनरार्जन करता है फिर.

तुम बहुत बहुत चतुर हो पलक!

'लोचन के लिए कुछ भी हो सकती हूँ मैं... कारण यह कि मैं अपनी पलकों में केवल एक को स्थान दे सकती हूँ. ... और वह तुम हो.... सिर्फ तुम.' ... लोचन के दायें गाल को चुटकी से नोचकर उसने उसके वक्ष को संगीतमय कर दिया था, और भर दिया था. खुशफहमी की दौलत से घर का एक-एक कोना.... और छतों तक का सारा खालीपन.... दोनों ही पुष्प और गंध की मानिन्द थे; वे थे भी तो लोचन और पलक.

++++++++++

कुछ दिन बाद.

बड़ी व्यग्रता से पूछा लोचन ने-'तुम्हारी आंखो में इतनी वेदना क्यों है पलक? मेरा मन सोचता है.... शायद तुम दुःखी हो मेरे साथ, क्योंकि कल से ही मैं तुम्हारे सुषमामयी बदन पर रह-रहकर उभरते और अंतर्धान होते कुछ फीहे देखकर किसी अज्ञात भय से थरथरा उठता हूँ... रोमांच की अनुभूति होती है मुझे, मस्तिष्क में जुगनू-सी ऊर्जा आती है तुरंत ही ग्रहण-सा लग जाता है उसे.... फिर यकायक अजीब सी शून्यता रेंग जाती है पूरे शरीर में...! तब घर से बाहर निकलकर आसमान की ओर निहारने लगता हूँ निष्पलक... सब ओर और सब कहीं एक ही ऊँचाई में वह लहराता हुआ तो दिखता है किन्तु क्षितिज बनने के लिए किंचित्मात्र आकुल-व्याकुल नहीं... क्योंकर है आसमान का ऐसा आचरण?

शून्य का ऐसा व्यवहार अस्वाभाविक नहीं.... क्योंकि धरती में व्यग्रता की कमी है... तुम ठीक ही कह रहे हो शायद मेरे अंतस की व्यथा की बाबत. मुझे महसूस होता है जैसे मैं ऐसी निरीह यात्री हूँ, जिसके पांव के तलुओं में कांटे चुभे हैं; इनसे उपजा दर्द कुछ कुछ प्रियकर तो लगता है, किन्तु कभी कभी उसकी तीव्रता यूं बढ़ जाती है कि एक पग भी आगे बढ़ाना बड़ा दुष्कर लगता है.

अरे....? ऐसा......?

हां लोचन! तलुओं की यह व्यथा

विडम्बना

जिसके लिए हम भूखे सोते,
वहीं कहीं फेका जाता।
खाते कुत्ते, जीव, जानवर,
नया पुनः सेंका जाता।
देख देख कर लार टपकते,
अधर दंत से दब जाता।
शब्द नहीं फूटते मुखों से,
आत्मसात कर रह जाता।।
जिसके लिए हम प्यासे रहते,
गला सींचने न पाता।
वही कहीं फव्वारे चलते,
लान, बाग सींचा जाता।
मन ललचाता अमृत जल से,
पर पीने को न पाता।
जिसके लिए हम नंगे रहते,
तन ढ़कने को न पाता।
ठिठुर ठिठुर कर रात बिताता,
जीना दूभर हो जाता।
वहीं कहीं दीमक खा लेते,
घर का तल पोंछा जाता।
ऊँच नीच की अतुलित खाई
दिन प्रतिदिन है गहराती
काश! बड़े कुछ झुके कृपा कर।

ईश्वर शरण शुक्ल, इलाहाबाद

धीरे-धीरे मन और मस्तिष्क में प्रवेश कर जाती है, तब मेरे शरीर के सारे ही अवयव... और उनकी अस्थियों में अजीब सी टूटन मच जाती है. और मनोबल बिखरने लगता है.! किंतु तुम मेरी इस व्यथा के कारण अपने धीरज के बांध को दरकने मत देना, यथाशक्ति बचाना उसे टूटने से.

++++++++++++++++++++

इन दो दिनों में तुम्हारा पूरा शरीर ताप से जल रहा है. तुम्हारे हाथ और माथे पर, शरीर का कहीं भी स्पर्श करने पर एक झटका सा लगता है और तुरंत हाथ हटा लेने का मन करता है. इतना ज़्यादा बुखार कैसे बर्दाश्त कर पा रही होगी तुम?

हां, किन्तु डाक्टर तो नहीं समझ पाता मेरा यह विकार. उसके लिए तो यह सिर्फ मौसमी बुखार है-गर्मी और शीत के समिश्रण से उपजा. देखा नहीं तुमने क्या, कुछ देर पहले ही! एक महानतम् स्वास्थ्य-चिंतन की भंगिमायें बनाकर जगह-जगह किस तरह फेरता रहा था अपना ऑला.. जैसे उसे बुलाकर अकारण ही परेशान किया गया हो.

ओठों को नुकीला बनाकर लोचन ने उसे चुचकारा-पुचकारा था, गालों पर थपथपी दी थी, माथे पर बारम्बार छमककर आती हुई अलकों को हथेली से पीछे की ओर सॅवारा भी था.जाने कितने स्नेहजन्य वात्सल्य घट कुछ ही क्षणों में उड़ेल दिये थे पलक पर. तब कहीं सुर्ख आंखे थोड़ा सा खुली थी. बोला वह-'घंटाघर के सामने वाले ज्योतिषी के पास गया था मैं, तुम्हारी जन्म कुंडली लेकर.

तो...? कुछ बताया क्या?

कई चक्र बनाकर ग्रहों की चाल देखता रहा, उनकी अंतर्दशायें भी विचारी. फिर गुरू गंभीर स्वर में बोला वह-'क्षणिक है यह विकार क्योंकि कुछ ही समय में बृहस्पति सप्तम में प्रवेश करेगा. मंगलकारी भविष्य है पुत्र! सच कहता हूँ.. बड़ा संतोष मिला था ज्योतिषी की शुभकामना को सुनकर. दो क्षण के लिए खुशी के सातवें अंतरिक्ष में डोलने लगा था मैं... यहां तुम्हारी ही नाकनक्श वाली अनगिनत परियों ने हम दोनों के प्रति मंगलकामनायें व्यक्त की थी. इससे ज्योतिषी के पुरोचाक पर मेरा यदिंकचित संदेह विश्वास में बदल गया था.

इस बीच पलक ने संतोषपूरित दृष्टि से लोचन को देखा था. कहता गया वह-हां, ज्योतिषी ने मेरी दोनो हथेलियों, उनकी उंगलियों और सभी नाखूनों को भी उलट पलटकर देखा था. आंखो में चमक भरे हुए फिर कहा था उसने-' एक अत्यंत उत्तम ग्रह स्थिति के धनी हो तुम. प्यार का अध्यात्मक तो कोई तुम दम्पत्ति से सीखें. सलाह की थी-जिन्दा मछलियॉ खरीदकर किसी सरिता या सरोवर में डलवा दूं.

हॉ..?

मैने ऐसा करा भी दिया है. सो रही थी तुम उस समय.

'तो जगा देते मुझे. बोली वह.

नहीं; मेरा उद्देश्य तो तुम्हें स्वस्थ देखना है, कष्ट देना नहीं. बस मछलियों से भरा हुआ घड़ा हाथों में थामे हुए मैने तुम्हारे कुछ चक्कर लगाये, शिवाले के पास वाले सरोवर में गिरा आया सभी को. जीवन की वापसी से बेजुबान वे मछलियां भी तुम्हारे स्वस्थ होने की कामना कर रही होंगी. सच कह रहा हूँ पलक, इन तीन-चार दिनों में तुम तो क्षीण हुई ही, मेरा अंतर्मन भी किसी मरूस्थल में एक बूॅद पानी की फिराक में भटकते हुए यात्री की तरह तलफा है... तिलमिलाया है.... एक एक लम्हा संत्र सपूरित रहा है, सारी ही चीजों धुधली और मटियायी सी लगने लगी है. इस वक्त दीवार पर फैली हुई सूरज की धूप में बदरंग और कुछ फीकी फीकी सी दिख रही है.

सुनते-सुनते पलक ने अपने सिरहाने बैठे हुए लोचन का हाथ उसके कंधे से मुंह तक सहलाया था.. फिर अकस्मात चीख उठी थी. लगा-जैसे उसके ललाट और आसपास के अंगों में दुस्सह वेदना जाग उठी है. कुछ क्षणों की बेचैनी के पश्चात बिल्कुल ही शान्त हो गई थी वह . पलके बंद किए हुए. फिर जब उन्हें उठाया, बारम्बार सप्रयास उठाया उन्हें तो दोनों ही नयन पिघलने लगे थे. चीख उठी वह, 'मुझे कुछ दिखाई क्यों नहीं पड़ रहा है लोचन? .. जाने क्या हो गया है आंखो को. हां हो अब मैं बिल्कुल हीं नहीं देख सकती, जैसे संसार का सारा ही अंधियारा समा गया है इनमें, यानि इन पर किसी ने चिपका दिया है कालेकलूटे अंधकार का अवरोध!' विलाप करने लगी थी वह. अब तो पावसी आकाश के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा, जिसे देख सकूं. क्या करूं मैं लोचन?

'क्या कह रही हो तु?.. देखों देखो

ग़ज़ल

ये कातिल निगाहें ये मासूम चेहरा।
खुदा जाने दुनिया में क्या जुल्म ढाये।।
ये होठों की लाली ये काजल भी गेहरा।
न जाने कहां किसके दिल को लुभाये।।
तुम्हीं ग़र जो मेरा यकीं न करो तो।
जमाने को कैसे यकीं मुझ पे आये।।
तुम्हारे बिना रौशनी कैसे हमदम।
तुम्हारे बिना कौन रस्ता दिखाये।।
'वारिज' ने हरदम दिया फैज़ जिनको।
कोई उसको आके क्योंकर बताये।।

हरिचरण वारिज, भोपाल, म.प्र.

सुनो पार्थ

जो सच बोलेगा-मारा जाएगा
झूठ के पक्ष में लड़ना है पार्थ-
महाकाल के इस हिस्से में
जो झूठ बोलेगा-सत्यवादी कहलाएगा
इसलिए झूठ बोलो, झूठ देखो, झूठ करो पार्थ
मिथ्यानन्द में डुबो दो सबको
नीति-अनीति के चक्रव्यूह से बाहर निकलो पार्थ
न धर्म है-न अधर्म है
असत्य को सत्य मानो-मक्कारी करो पार्थ
इस महासमर में
घोड़े की तरह हिनहिनाओ
कुत्ते की तरह दुम हिलाओ
गुलामों की तरह हाथ मलो
मक्खन की तरह हाथ मलो
मक्खन खाना चाहते हो तो
मक्खन लगाओ पार्थ
जो सच बोलेगा-मारा जाएगा........

अजामिल, इलाहाबाद

मेरी ओर शान्त मन से. हो ही नहीं सकता वह... जो तुम कह रही हो.' कहते कहते लोचन के नयनों के बांध ा धसकने लगे थे. उसने देखा, अचेत हो गई है पलक; हिलाने डुलाने से भी उसकी संज्ञा शून्यता पर कोई भी संतोषप्रद बदलाव नहीं. निःसहाय बाबला सा खड़ा हो गया वह. बुदबुदाने लगा, फिर यकायक बड़बड़ाने भी. 'इतनी भीषण परीक्षा क्यों ली जा रही है ईश्वर? कुछ तो विचारा होता ऐसा करने से पहले! किसी जन्म के मेरे अपकृत्यों का दण्ड इसे क्यों? जीवन की इतनी लम्बी यात्रा अँधेरे में पूरा करने के लिए इसे विवश न करो.. किंचित्, सोचो-क्या तुम ठीक ठीक निभा रहे हो परम पिता होने का दायित्व? नहीं... शायद नहीं; बिल्कुल नहीं. लगातार सिसक रहा था लोचन ऐसा कहते-कहते... चूर चूर हो रहा था उसका मानस मुकुर. इस दौरान पलक पहले की तरह ही अचेतनता के वश में थी.

++++++++++++++++++++

दृष्टिलोप के बाद भी वक्त निचोड़ता रहा लोचन को. दुर्दिन ही हावी रहे दोनो पर. सुकोमला के अंग-प्रत्यंग पर असंख्य विस्फोटक उभर आये थे. इसके फलस्वरुप कुछ समय पूर्व का उसका वर्तमान जाने किस दुर्योग से वर्तुलाकार और विकृत हो गया था. अनाकर्षण और विद्रूपता की पर्याय बन चुकी थी वह. कुसमय के इस प्रहर ने वस्तुतः चकनाचूर कर दिया था लोचन को. भूल गया था वह अपने जीवन के दैनन्दिन कार्यकलाप; मस्तिष्क के कितने ही संकाय वेदनातिरेक के कारण पंगु और निष्क्रिय हो चुके थे. पलक और उसके जीवन का यह मोड़ कितना रहस्यमयी, कितना दर्दनाक और कितना अनपेक्षित था. किन्तु अब वह उफनाये सागर के बाद की निःशब्दता में है. सारी ही कुण्ठाओं को भरे ही रखना चाहता है अपने सीने में. एक कश ली हुई सिगरेट की तरह निरस्तित्व हो जाना नियति हो गई है उसकी.

आज अनायास ही आकाश पर बादल विचर रहे है; वायुप्रेरित उनकी गति कहीं तीव्र है तो कहीं मध्यम. कहीं कहीं ठहरे भी दिखते है वे... उन्हें छूकर जो झोके धरती पर आते हैं. . चेतन व अचेतन दोनो के लिए शीतलता और शान्तिदायी है. पलक को भी आज वेदना से कुछ राहत है. पास ही बैठा हुआ लोचन उसके अवयवी आकर्षण के अतीत की याद में अपने आप को भूला है; किन्तु पलक के एक प्रश्न से उसने स्वयं को कुछ विचलित महसूस किया.. सुना था मैने शरीर में माता के प्रकोप के विषय में, कभी उनके दर्शन नहीं हुए.. और आज भी मैं असमर्थ हूँ ऐसा करने में. बोलो लोचन-किस आकार, रुप और रंग में ये अभिव्यक्त करती है अपना आक्रोश? मैं अनाकर्षक और अपदर्शना कही भारस्वरूप तो नहीं लग रही हूँ तुम्हें? अकारण ही संवेदना के पाश में तो नहीं बंधे हो तुम?

कैसे यह विचार आया तुम्हारे मन में? हम और तुम दो शरीर तो है अलग-अलग, किन्तु. पलक तुम अक्षय हो, देख नहीं सकती, भाग्य का चमत्कार लेकिन मैं लोचन हूँ, साक्षी हू इस बात का.. तुम्हारे अंग-प्रत्यंग में प्रष्फुटित सभी विस्फोटक एकापति के अप्रतिम सौन्दर्य से सिक्त है; दर्पण से उनके सम्पूर्ण प्राकृतिक उत्कर्ष का कोई भी दीवाना हो सकता है. चन्दन वन की महारानी सी तुम्हारी साँसों में बेला, चमेली, गुलाब और रातरानी जैसे कितने ही पुष्पों की सुगंधि है. इन्द्रजाल ही मानो यह... देवलोक की सारी ही जानी मानी अप्सराओं के तत्वरूप मे तुम अनन्य अखिल सृष्टि सुन्दरी दिखती हो ... सच.

अच्छा तो लगता है तुम्हारा ऐसा कहना पर अविश्वसनीय भी लगता है. इस तरह से उपहास का विषय न बनाओ मुझे. मैं तो तुम्हारी अर्द्धांगिनी रही हूँ, और अब भी हूँ. किन्तु निर्विवाद रूप से वह नहीं हूँ जो तुमने अभी-अभी मेरे लिए कहा है. चतुर्दिक जहाँ केवल यह हो, पृथ्वी, आकाश, समस्त दिशाओं की दीवारों से भी तपस फूट रही हो, पृथ्वी के अंतर्मन का कोई भी कोना रेगिस्तान बनने से कैसे बच सकता है,

कहीं किसी गहराई में दसियों हजार चन्द्रमाओं द्वारा शीतलता उड़ेलने से लाभ भी क्या! लोचन, मेरे मानस में उठते हुए तूफानों को बेहतर समझ सकते हो तुम. कुछ करो ऐसा कि मुझे भी आत्मतुष्टि के कुछ क्षण नसीब हो और तुम भी आसमान के दूसरी ओर की दुनिया को झांक सको.

ऐसा न कहो पलक, सिमटी रहने दो मेरी नन्हीं सी दुनिया को आसमान से पहले तक. बड़ी आसक्ति है इससे मुझे, जाने कितने संसार, भूधर और झरने, सरितायें और महासागर समाये हैं इसमें. इसे तो अनन्त बार देखते रहने पर भी इसका नयापन मन को नये से नया सुख देता है. तुम ऐसी बातें क्यों सोचती हो जिनसे स्वयं को दीनहीन समझने लगूं. दारूण दुर्भिक्ष पड़ने पर भी हरियाली स्वप्न की बात बन जाय, खेत के प्रति किसान का व्यामोह पूर्ववत ही रहता है. तुम मेरी बहुत बड़ी सम्पदा हो पलक.

दुःखिता में कोई भी प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की.. आंखो से केवल अपनी वेदना को बहाती रही थी. इसके अतिरिक्त था भी क्या बेचारी के वश में.

++++++++++++++++++++

आज...

बारिश के आगमन की सूचना देने आये मेघ सुबह से ही रहस्यमयी दिख रहे थे. धीरे-धीरे उन्होंने सम्पूर्ण आकाश को आकृत कर लिया था. थोड़ी थोड़ी देर में बिजली कहीं न कहीं चमक उठती तो मेघों की स्याही कुछ कुछ हल्की नज़र आती. पलक और लोचन अपने बरामदे में बैठे शीतल वायु के स्पर्श का सुख ले रहे थे. अकस्मात कहीं पा ही कुछ देर तक बादल गरजे थे, कड़के भी थे रह रहकर, लगातार विस्फोट से हुए थे जैसे दर्जनों शिवधनुष एक के बाद एक टूटे हों.. अनगिनत बिजलियां एकत्रित होकर पलक की पलकों तक बार-बार आई थी... बारम्बार हुआ था उन्हें फिर दूसरे ही क्षण लौटी भी. कई बार दोहराया था उन्होंने यही.. तो उसके हृदय की धौकनी तेज हो गई थी, हांफने लगी वह, भयभीत सी लोचन के कंधो को थामकर समा गई थी उसके सीने में. कुछ देर यूं ही रही वह... फिर सामान्य हुई. पलकों को बार-बार फड़फड़ाया, अनन्तर किसी विस्मय को शब्द दिये थे...'ये कैसा चमत्कार है लोचन! ईश्वर की माया को धन्यबाद दो. मैं तो अब देख सकती हूँ. वर्षा के पानी से भरे हुए आंगन में कितना आकर्षक दिखता है बूंदो का नृत्य. छोटी-छोटी नालियों से होकर बह रहे वर्षा के जल में कितनी आतुरता है. मेरी ऑखों में समाया हुआ सारा ही कलूटापन लगता है आसमान ने पी लिया है.

'तुम सच कह रही हो पलक? लोचन के इस प्रश्न में अनिर्वचनीय आहलाद था. विश्वास ही नहीं हो रहा था उसे पलक की बात पर.

हां हां! मैं तुम्हारी सलोनी केशराशि, उभरा हुआ माथा, आत्मबल से मुखरित नयन, नासिका, कपोल, अधरों पर थिरकता हास, वक्ष और समर्थ वाहें, सब कुछ तो देख सकती हूँ.

तब तो मेरे जीवन में अब कोई रिष्टता नहीं. हरियाली से उसका रोम-रोम आछन्न है. ज्योतिषी की भविष्यवाणी शायद आज फलीभूत हुई है. बड़ी देर के बाद ईश्वर को भी हम दोनों पर तरस आया....अनुभव किया उसने हम पर अपनी मनमानियों का. एक बार फिर सुनना चाहता हूँ तुम्हारे मुख से ... कि तुम वास्तव में देख सकती हो.

हां प्रिय! माचिस में तीलियां रगड़ते से उस रिक्शेवाले के पॉव, अपनी पीठ पर पूरे मुहल्ले के सुख और दुख लादे हुए चले आ रहे उस डाकिये.... और महासागर सा विशाल तुम्हारा मानस.. कुछ भी देख सकती हूँ. और हां, उस बहुखण्डी की आखिरी मंजिल पर नीले फ्रेम वाली छोटी सी वह खिड़की भी मेरे निगाह में है. दृष्टिलोप से पूर्व इससे पहले वाली खिड़कियों को देखा करती मैं, तब यह धीमी आवाज में मुझसे कुछ कहने की कोशिश करती थी, मैं समझ नहीं पाती कुछ... कहते-कहते पलक चमत्कारजन्य अपनी प्रसन्नता को आंसुओं से व्यक्त करते हुए कुछ देर बाद फिर बोली-'वह खिड़की शायद कहती थी-भूत तो अप्रासंगिक है, वर्तमान तो देख ही रही हो... मैं दिखाऊंगी. तुम्हें सारा ही अनागत. इसके अन्तः सरोवर में विचरती तुम्हारी अवसाद शून्यता, तुम्हारी अरूप कुंठायें, अनेकरंगी आहलाद, और उपलब्धियों के अनुपम गुच्छ.

बिल्कुल सही है तुम्हारा अनुमान पलक. भ्रम की गुंजाईश ही नहीं इसमें. यही और ऐसा ही संकेत था उसका. इससे पूर्व की खिड़कियां लक्ष्य से पूर्व की शिलाचिहन थीं.

हां, लोचन, तो आओ एक बार फिर अभ्यास शुरू कर दूं तुम्हें अपनी पलकों में सँजोये रखने का. मिलकर सृजन करें अपने नये वर्तमान का.

शुभ विचार

संपादकः **श्री प्रदीप नाहटा**,
६३ए, नाहटा निवाससूरज नगर, उज्जैन ४५६००६

अंगमाधुरी

संपादकः **डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'**
शेखर प्रकाशन, वोरिंग रोड(पश्चिम), ५६, गांधी नगर, पटना-१

व्यक्तित्व

श्रीमती हेमा उनियाल

१२ जुलाई १९६३ को जन्मी श्रीमती हेमा उनियाल स्नात्तकोत्तर-अर्थशास्त्र, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल से करने के बाद भातखंडे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ, उ.प्र. से संगीत विशारद-गायन में किया. ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक शोध करने में इनकी गहरी रूचि है. सास्कृतिक विरासत पर शोध करना आपका शैाक सा बन चला है. मृदुल स्वभाव की धनी श्रीमती हेमा उनियाल के पति श्री आर०पी० उनियाल एयर फोर्स से रिटायर होने के बाद किसी प्राईवेट फर्म में कार्यरत है.

आकाशवाणी दिल्ली से गायन में मान्यता प्राप्त, देव विज्युल फिल्म, निर्मात्री निदेशिका हेमा विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखान भी करती है. लगभाग ६०-७० पत्र-पत्रिकाओं में कविता,

शोध रिर्पोट व आलेख प्रकाशित हो चुके है. हेमाजी ने कई क्षेत्रों शोध भी किए है.

शोध कार्यः

१. 'जोहार के शैाका', पिथौरागढ़, उत्तरांचल की जनजाति पर आधारित वृत्त चित्र का निर्माण,

२. शोध संकलन कार्य उत्तरांचल कुमाऊ की लोककला, संस्कृति पर शोध कार्य एवं वृत्त चित्र का निर्माण

३. कुमांऊ के प्रसिद्ध मंदिरों की धर्म संस्कृति एवं वास्तुशिल्प पर शोध कार्य, पुस्तक लेखन एवं वृत्त चित्र निर्माण के रूप में.

४. निर्देशिका-'स्वास्थ्य के बहुआयामी पहल 'ज्ञान विज्ञान समिति लखनऊ के लिये वृत्त चित्र का निर्माण.

५. भारतीय वायु सेना में एएफडब्लूडब्लूए सेन्ट्रल के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की १९९२ से १९९७ तक सदस्या निर्वाचित.

६. नई दिल्ली में उत्तरांचल के विभिन्न कार्यक्रमों का मंच संचालन

राजेन्द्र 'रज्जन' उर्फ

आर.पी.सक्सेना **का निधन**

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा साहित्य मेला-०७ में सम्मानित, ग्वालियर, म.प्र. के वरिष्ठ साहित्यकार श्री राजेन्द्र रज्जन उर्फ आर.पी.सक्सेना का निधन ३० जून २००७ को हो गया. ७६ वर्षीय श्री रज्जन अ.प्र. सहायक संचालक, हा. म.प्र. शासनस से सेवानिवृत हो चुके थे. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त साकेत सम्मान से सम्मानित तथा बचपन से ही साहित्य में अभिरुचि रखने वाले श्री रज्जन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं. अध्ययन काल में ही मार्च १९५५ में एक संगीत का प्रसारण वाईस ऑफ अमेरिका द्वारा किया गया. आकाशवाणी पर भी अक्सर आते रहे हैं. मार्च १९८८ में सागर में श्री हरिशकर गौड़ के जीवन की संगीतमय प्रस्तुति कर सम्मानित हुए. भारत के राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जीवनी पर आधारित रचना लिखकर राष्ट्रपति द्वारा ध न्यबाद पत्र प्राप्त किया. आपकी सॉई चालीसा, सॉई सौरभ नामक कृतियां प्रकाशित हो चुकी है तथा ओरछा की नर्तकी राय प्रवीन खण्ड, काल कथानक-छन्दों में रचित, डॉ. हरी सिंह गौड़, गूजरी महल, हालॉजलि, गीत-ओ ग़ज़ल संग्रह सैन्य सुधा, भारत की पॉच वीरांगनाएं, राजनैतिक कुंडलियॉ, रतनगढ़ की देवी प्रकाशनार्थ कृतियां है.

पत्रिका परिवार व विश्व हिंदी साहित्य सेवा परिवार की तरफ से उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई.

प्रभु से मिलन

आर.पी.सक्सेना

रोज करे हम कोशिश तो प्रभु से मिलने की
सांझ हुई, अब जीवन सूरज के ढ़लने की
रोज करे.......
प्रेम इतना तुमसे जितना यह सागर
भाव भरे उर में इतने जितना भव सागर
आज हमारे प्राण बुलाते हैं, प्रभु आओं
लगन लगी अपनी अब तो तुमसे मिलने की।
रोज करे....
विश्वासों के यह को हमने प्यारा किया
एक रहे हम दो किन जीवन भी एक जीवन भी एक जिया
यह हमारा है, जनमों का आत्मा में बसता आया
लगा मन राह तके तुमसे मिलने की
रोज करे........
बांध रखूं अब में किससे उरके अंचरा को
देख पखेरु सा मन ये उड़ता सहरा को
घोर अंधेरा है, अखियां धुधली धुधली सी
टूट न जाये आशन्सुरी तुमसे मिलने की
रोज करे.......
+++++++++++++++++++++++

बुद्धावतार

कालीचरण दीक्षित, शाहजहाँपुर

'ईश्वरावतार भगवदाविर्भाव जन कल्याणार्थ सभी युगों में होते है. भागवतपुराण १/३/२४ में दशावतारों में बुद्धावतार नवम कहा है. 'बुद्धोनाम्नाजन सुतः की कटेषु भविष्यति' बिहार मगध प्रदेश में मायादेवी के पुत्र रुप में भगवद्वतार बुद्ध रुप में हुआ. कलियुग का प्रभाव बढ़ा संसा सागर में राग घड़ियाल तथा अज्ञान का जल उमड़ा तब दयानिधि भगवान द्रवित हो जनहितार्थ शाक्यवंश में राजा शुद्धोदन के घर बुद्ध अवतरित हुए संत कवि तुलतसी ने विनय पत्रिका ५२/८ में बुद्ध की चर्चा वन्दना की है.

देवी भागवत में उल्लेख है पशु हिंसापरक दोषपूर्ण यज्ञ का खण्डन करने वाले विघातक, अहिंसा के विकासक योगी बुद्ध कहे गये हैं. मत-मतांन्तर से भी भारतीय वाङमय में बुद्ध का वर्णन है. ज्योतिषशास्त्र के वृहत्पाराशर होरा शास्त्र में बुद्धजी को नवग्रह के अन्तर्गत बुध ा ग्रह का अवतार कहा है प्रमाण में श्लोक है- 'रामोवतार सूर्यस्य चन्द्रस्य यदुनायकः।

नृसिहों भूमि पुत्रस्य बुद्धः सोमसुतस्य च।।

बुद्धजी हाथ में मजिनी बढ़नी ले भूमि पर मार्ग को बढ़ारते स्वच्छ करके मार्ग में पग रखते कुछ दैत्यों अनार्यो के समीप पहुँचे और उन्हें उपदेश दिया-यज्ञ में वलि हिंसा होती है, यज्ञ करना पाप है..... वेद का भी खण्डन किया. इससे सनातन धर्मी उनसे दूर हो गये. बुद्ध ने कहा था हम चीटी आदि किसी जीव पर पैर न रखें इसीलिए झाडू से पथ साफ करके मार्ग पर चलते हैं. महात्मबुद्ध के अहिंसा तेज ज्ञान से प्रभावित हो बहुत लोग उनके अनुयायी बन गये. मानव में गुण भी होते है भूल दोष भी होते है. राधेश्याम रामायण में लिखा है-गुण और दोष होते जिसमें वह ही तो चरित मानवी है. बौद्ध दर्शन अवैदिक नास्तिक दर्शन कहा गया है. तभी तो भगवान शंकराचार्य ने बौद्धों से लोहा लिया. शास्तार्थकर ध ार्म ध्वजा फहराई थी, हीनयान महायान से संघर्ष हुआ था.

++++++++++++++++++++

विशिष्ट सदस्यः ११६

इन्द्र बहादुर सेन 'कुंवर कान्त'

जन्म-१५.०८.१६५२, ग्राम-जलतूरी, जिला-पिथौरागढ़

शिक्षा-१६७१ में आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक, १६७४ कुमायूँ विश्वविद्यालय से बीएड किया.

सम्प्रति-राजकीय जिला पुस्तकालय, पिथौरागढ़ में पुस्कालायध्यक्ष

प्रकाशन-सरहद-एकांकी संग्रह, मैली चांदनी-काव्य संग्रह, गुनाहों का जाल-उपन्यास

सामाजिक कार्य- पिथौरा सांस्कृतिक परिषद, सृजन दीप कला मंच एवं देवभूमि साहित्यकार मंच

सम्मान-साहित्य शिरोमणि, साहित्य रत्न, भारती पुष्प, युगाचार्य प्रभाकर मिश्र सम्मान, राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान, हृदय कवि रत्न, बाल साहित्य श्री सम्मान.

प्रशस्ति पत्र- लेखन एवं रंगकर्म एवक समाज सेवा तथा विभिन्न विधाओं में लेखन हेतु

आत्मकथ्य- स्वार्थ के साथ परमार्थ की भावना लिए जीवन पथ पर अग्रसर.

संपर्क-जी.आई.सी गेट, पोस्ट डिग्री कॉलेज, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

तलाश

तू तलाश है कई जनमों की,
मेरी आस तू, विश्वास तू।
आबाद तुझसे.. मेरा जहाँ,
है रात दिन तुझ पै निहाँ।
मेरे हम सफर और हमनवा,
आबाद तुझसे मेरा जहाँ।
हर जवाब का हो सवाल तुम,
हर सवाल का हो जवाब तुम।
तेरा हाथ, हाथ में आ गया,
दो जहान संग-संग पा गया।
मेरे हमसफर और हमनवा,
आबाद तुझसे मेरा जहाँ।
जिन्दगी की राह अकेली थी,
तेरे सिम्त चाहे, बदल गईं।
सितारे झोलियों में भर गये,
दर्दे दिल को मिली दवा।
मेरे हमसफर मेरे हमनवा,
आबाद तुझसे मेरा जहाँ.।

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

पत्राचार से करें एम०ए० हिन्दी

आशा मोहिनी

आजकल हिंदी का काफी बोलबाला है. यहां तक कि सरकारी कार्योलयों में हिंदी में काम करने को भी कहा गया है. विदेशी भी हिंदी सीखने में काफी दिलचस्पी दिखा रहे है. देश में विभिन्न विद्यालयों में उक्त पाठ्यक्रम करने की सुविधा है.

कर्नाटक विश्वविद्यालय, योग्यता-सम्बंधित विषयों के साथ स्नातक, **चयन**-मेरिट के आधार पर **पताः** कर्नाटक स्टेट मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर, ५७०००६

आंध्र विश्वविद्यालय, योग्यता -संबंधित विषयों के साथ स्नातक,**अवधि**-दो वर्ष, **प्रवेश**- अगस्त-सितम्बर से शुरु होकर अक्टूबर तक चलती है.
पताः स्कूल ऑफ डिस्टेन्स एजुकेशन, विशाखापट्नम- ५३०००३

बंगलौर विश्वविद्यालय, योग्यता-पचास प्रतिशत अंको से स्नातक **अवधि**-दो वर्ष **प्रवेश**-जुलाई-अगस्त से अक्टूबर तक होती है.
पताःडायरेक्टोरेट ऑफ करसपोंडेंस कोर्सेस एंड डिस्टेंस एजुकेशन, सेंट्रल कालेज कैम्पस, बगलौर-५६०००१

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय योग्यता-स्नातक, **अवधि**-दो वर्ष **प्रवेश**-जुलाई से सितम्बर**पता**-इंस्टीट्यूट आफ करसपोंडेंस कोर्सेज एंड कंटीन्यूइंग एजुकेशन, मेरठ-२५०००२

दिल्ली विश्वविद्यालय ,योग्यता-पचास प्रतिशत अंको से स्नातक **अवधि**-दो वर्ष,**पताः**स्कूल ऑफ करसपोंडेंस कोर्सेस एंड कंटीन्यूइंग एजुकेशन, कैवलरी लाइंस, दिल्ली-११०००७

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
योग्यता-किसी भी विषय में स्नातक **प्रवेश**-जून-जुलाई से शुरू होकर अगस्त-सितम्बर तक चलती है.
पताःइंटरनेशनल सेंटर फार डिस्टेंस एजुकेशन एंड ओपन लर्निग, समर हिल,शिमला -१७१००५

केरल विश्वविद्यालय, योग्यता-संबंधित विषय के साथ स्नातक **अवधि**-दो वर्ष,**पताः**इंस्टीट्यूट ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, तिरुवनंतपुरम-६९५५८१

ककातीय विश्वविद्यालय, योग्यता-संबधित विषय के साथ स्नातक, **अवधि**-दो वर्ष, **पता**-स्कूल ऑफ डिस्टेस लर्निंग एंड कन्टीन्यूइंग एजुकेशन, वारंगल- ५०६००९

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
योग्यता-संबंधित विषय में स्नातक **अवधि**-दो वर्ष, **प्रवेश**-जुलाई-अगस्त से लेकर सितम्बर, **पताः** डायरेक्टोरेट ऑफ करसपोंडेंस कोर्सेस, कुरुक्षेत्र-१३६११९

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय
योग्यता-बी.ए., बी.एस.सी. या बी. काम **अवधि**-दो वर्ष,**पताः**डायरेक्टोरेट ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, रोहतक-१२४००१

मुम्बई विश्वविद्यालय योग्यता-स्नातक, **अवधि**- दो वर्ष , **प्रवेश**-जून-जुलाई से सितम्बर तक
पताःइंस्टीटयूट ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, एम.जी.रोड, पोर्ट कैम्पस, मुम्बई-४०००३२

उस्मानिया विश्वविद्यालय
योग्यता-४०-५० प्रतिशत अंको के साथ स्नातक **अवधि**-दो वर्ष **प्रवेश**-जुलाई से अक्टूबर तक, **पताः**सेंटर फार डिस्टेन्स एजुकेशन, हैदराबाद-५००००७

पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
योग्यता-४५-५० प्रतिशत अंको साथ स्नातक तथा बी.ए.आनर्स,**अवधि**-दो वर्ष, **प्रवेश**- जुलाई से सितम्बर तक **पता**-डिपार्टमेंट आफ करसपोंडेंस स्टडीज, चंडीगढ़-१६००१४

पांडीचेरी विश्वविद्यालय, योग्यता-स्नातक, **अवधि**-दो वर्ष, **प्रवेश**-जून से अगस्त, **पताः**डायरेक्टोरेट आफ डिस्टेंस एजुकेशन, यूनिवर्सिटी कैम्पस, कालापेट, पांडिचेरी, ६०५०१४

पटियाला विश्वविद्यालय
योग्यता-स्नातक **अवधि**-दो वर्ष **प्रवेश**- जुलाई से अक्टूबर तक **पताः**डिर्पाटमेंट आफ करसपोंडेंस कोर्सज, पटियाला, १९७००२

एस.एन.डी.सी.महिला विश्वविद्यालय, अवधि- दो वर्ष **योग्यता**-स्नातक, **प्रवेश**-जून से सितम्बर, **पताः** सेंटर फार डिस्टेंस एजुकेशन, सर विट्ठलदास विद्याविहार, जुहू रोड, सान्ताक्रुज, वेस्ट, मुंबई-४०००४९

सहयोगी पत्रिकाएं

स्वास्थ्य साधना केन्द
संपादकः श्री श्याम माहेश्वरी
कमला नेहरू नगर, लाल पुलिया के पास, चौपासनी रोड, जोधपुर,३४२००६

कान्ति मासिक
सपादकः डॉ. मुहम्मद अहमद
डी-३१४, दावत नगर, अबुल फज़ल इन्क्लेव, जामियानगर, नई दिल्ली

वामांगी
सपादकः डॉ० सत्यदेव आजाद
२३१३, अर्जुनपुरा, डींगगेट, मथुरा-२८१००१

श्री श्री विद्याधाम संदेश
सपादकः डॉ० गजानन शर्मा,विमानपत्तन मार्ग, इन्दौर, ४५२००५, म.प्र.

अजन्ता हि.सा
सपादकः ऋषि भामचन्द्र कौशिक
पो.बा. ६२५, हैदराबाद-२, १९-१-९९०, गोल्ला खिड़की, हैदराबाद

कहानी

तलाक

✍ डा० अशोक 'गुलशन', बहराइच

काफी देर तक जब कोई ग्राहक नहीं आया तो मेरा मन बेचैन हो उठा और मैं कुर्सी से उठकर इधर-उधर टहलने लगा. अचानक मेरी नज़र फुटपाथ पर पड़े एक दुध मुँहे बच्चे पर आकर टिक गयी जो मुँह से उँगली निकल जाने के कारण रो रहा था. थोड़ी देर बाद फिर मुँह में उँगली डालकर चूसने लगा. उस बच्चे को देखकर जब मुझसे बिल्कुल न रहा गया तो पास बैठे युवक से मैं पूछ ही बैठा कि "यह तुम्हारा बच्चा है? उसने झल्लाते हुये जवाब दिया कि पता नहीं किसका बच्चा है, एक घंटे से यूँ ही पड़ा है. " मैं फिर वापस आकर कुर्सी पर बैठ गया.

१५-२० मिनट बाद एक २०-२२ साल की अधेड़ औरत सी दिखने वाली लड़की सलवार-कुर्ता पहने मेरे पास आकर मेरी कुर्सी से सट कर खड़ी हो गयी और मुस्कराते हुए मुझसे कहा-बाबूजी, दस रूपये दे दो, बहुत भूख लगी है. मैं अपने सामने बैठे हुए बुजुर्ग के चेहरे की तरफ कातर नजरों से देखने लगा. उसने दुबारा फिर कहा कि दो दिन से खाना नहीं खायी हूँ, बाबू जी.

मैंने उसकी तरफ अधीरता से देखा तो वह नाक-नक्श से थोड़ी उच्छंखल स्वभाव की लगी क्योंकि उसने अधिकार पूर्वक मुझसे पैसे की मॉग की थी, बिना किसी हिचकिचाहट के. मैंने उससे संकोच करते-करते पूछ ही लिया कि "तुम कहॉ रहती हो? यहॉ किसके साथ आयी हो, और क्यों?" उसने बेहिचक स्पष्ट रूप से कह दिया कि मैं बाहर से आयी हूँ. यहॉ मेरा कोई नहीं है. बाबा का दरबार है, मनौती मॉगने आयी हूँ. मेरे पति से मेरा आठ महीने पहले तलाक हो चुका है. मैं उन्हें बाबा से वापस मॉगने आयी हूँ. "तुम्हारा खर्चा कैसे चलता है, मैंने उससे आगे पूछा तो वह मुस्करा उठी फिर अपने बदन को निहारने लगी और फिर जब उसने समझ लिया कि मैं नासमझ हूँ तो वह बोल उठी-जिस्म....!"

तुम्हारे साथ और कौन है? मैंने फिर प्रश्न किया तो बाली-८ माह का बच्चा. मैं फिर सोचने लगा कि जो बच्चा फुटपाथ पर लेटा उँगली चूस रहा था वह कहीं इसी का बच्चा तो नहीं? वह बच्चा कहॉ है, मैंने पूछा-बाहर लेटा हुआ है, उसने जवाब दिया.

तुम्हारे पति ने तलाक क्यों दिया, मेरा अगला प्रश्न था. साहब वह दूसरी लड़की को चाहते थे, उसी से शादी भी करना चाहते थे क्योंकि वह पढ़ी लिखी थी, खूबसूरत भी थी और नौकरी भी करती थी मगर मेरे मॉ-बाप से उनके घर वालों से बहुत पुराने सम्बन्ध थे इसलिए लिहाज में रिश्तेदारों के जोर-दबाव से मेरी शादी उनसे हो गयी. दो साल तक हम एक दूसरे से काफी खुश रहे बाद में उन्हें मुझ पर शक होने लगा जबकि मैं ऐसी नहीं थी. जब मेरा बच्चा पेट में आया तो बार-बार गिरवाने को कहते रहे. मैंने उनकी बात नहीं मानी तो मुझे मारा -पीटा और मुझ पर बदचलनी का आरोप लगाकर यहॉ तक कह दिया कि यह मेरा बच्चा नहीं है और मुझे व बच्चे को घरसे निकाल दिया. इतना कहकर वह रोने लगी. मेरी ऑखे भी नम हो गयी. तुम माये क्यों नहीं गयी, मैंने पूछा. वहॉ भी अब कोई नहीं है. मॉ-बाप शादी के सात-आठ महीने के अन्दर ही चल बसे. एक भाई है उसे कोई मतलब ही नहीं है. अब न तो मायके में कोई अपना बचा है न ही ससुराल वाले ही मेरा खयाल रखते है. इसीलिये इधर-उधर भटक कर, मॉग कर जो कुछ भी पा जाती हूँ उसी से गुजारा चलता है, साहब.

मैने जेब में हाथ डाला तो पचास रूपये का नोट हाथ में आते-आते जमीन पर गिर गया. उसने उठाकर मुझे देना चाहा. फिर अचानक मेरे मुँह से निकल पड़ा-नहीं, तुम इसे रख लो, यह तुम्हारे काम आयेगा और सुनो, कल तुम फिर यहीं मिलना. तुम्हारे रहने-खाने का बंदोबस्त मैं कर दूंगा और तुम्हारे गुजारे के लिए भी अदालत से कोशिश करूँगा. अब तुम यह गलत काम मत करना. उसने नन्हें से बच्चे की तरह मेरी बात सुनकर स्वीकृति में सिर हिला दिया.

दूसरे दिन मैं उसे दिन भर खोजता रहा, मगर वह इन्सानों की दुनिया से बहुत दूर जा चुकी थी.

धरती मॉ

वो बड़ी सहिष्णु और दयालु है
अपनी छाती में हिन्द और प्रशांत
जैसे असंख्य महासागरों
उच्च पर्वत चोटयों को बिठाई है।
दुख, वेदना, हानि सह कर भी पूनम
खामोश, जग का वजूद
हरियाली सी मुस्कान दुनिया को
देती है वो धरती मॉ
हम सबकी मॉ।

सुश्री पुर्णिमा पण्डा, गढ़उमरिया, छत्तीसगढ़

सारस्वत जगत मासिक
प्र.सं.:**श्री पी.आर.ओझा**,
ललकार डाकघर के पीछे, सारस्वत
मार्ग, गंगाशहर रोड, बीकानेर,
३३४००१, राजस्थान

पंजी. सं.:832

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्पर्क स्थलः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-9335155949 **email**: sahityaseva@rediffmail.com

क्रमांक.............

सदस्यता आवेदन–पत्र

सदस्य का नाम : ....

पिता का नाम :...जन्म तिथि ....

शैक्षिक योग्यता :..

लेखन/पत्रकारिता का अनुभव :..

मुख्य व्यवसाय : ....

कार्यक्षेत्र :..

स्थायी पता ग्राम/मोहल्ला :..

....

पत्र–व्यवहार का पता :..

....

अन्य साहित्यिक संगठन जिससे आप जूड़ें हुए हों :..

....

आप हिंदी की किस प्रकार सेवा करना चाहते हैंः ....

दिनांक .... हस्ताक्षर सदस्य ....

संदस्यता के नियम

कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि हो रखता संस्थान की सदस्यता ग्रहण कर सकता हैं. सदस्यों की तीन श्रेणी निर्धारित की गई है. **साधारण सदस्य**-५०/-रुपये मात्र, **विशिष्ट सदस्य**-१००/-मात्र, **आजीवन सदस्यः** ५००/रुपये. सरक्षक सदस्यः १५००/रु० साधारण व विशिष्ट सदस्यता पॉच वर्ष के लिए मान्य होगी. विशिष्ट सदस्यों को विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका एक वर्ष तक निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इसके अतिरिक्त आप स्वेच्छा से साहित्य कोष के लिए १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों देकर कोष की श्रीवृद्धि में मदद कर सकते हैं. आपके द्वारा दी गयी धनराशि विश्व हिंदी साहित्य कोष में रक्खा जाएगा.

शुल्क प्राप्ति रसीद

नाम ....

पता ....

से शुल्क रु0 .... (शब्दो में) ....

.... प्राप्त किया।

प्राप्तकर्ता का नाम व पता .... हं0 प्राप्तकर्ता

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को कविता पढ़ना देखना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार मैं आप लोगों कुछ कविताएं दे रही हूँ. यह कविता आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.
आपकी बहन

संस्कृति 'गोकुल'

कोमल पॉव

सरल भोले
नन्हें नन्हें बच्चों के
कोमल पॉव।
नाचे नन्द के
ॲगनवा, हुलसे
गोकुल गॉव।
बुलाती धीरे
खामोश कदम्ब की
शीतल छॉव।
आओ कन्हैया
उचर रहे, काग
है कॉव कॉव।
खा लो माखन,
दिखाओ यशोदा को
न हाव भाव!

✍ **नलिनीकान्त**,अंडाल, पं. बंगाल

१. मुक्त पंछी

अम्मा मुझको पंख दिला दे
पंछी बन उड़ पाऊंगा
नील गगन का चक्कर काटूं
शाम को घर आ जाऊंगा
अम्मा मैं पंछी बन जाऊं
मन ही मन मुस्काऊंगा
स्कूल नहीं जाना मुझको
मैं उड़कर सब पढ़ आऊँगा

२. एक साथ

मिलजुल कर तुम रहना सीखो
मिलजुल कर तुम खेलो
आपस में लड़ना मत सीखो
प्रेम की वाणी ले लो
जीवन पथ बेहद लम्बा है
तुमको चलते जाना
मिल जुलकर तुम साथ चलोगे
फिर आगे ही बढ़ते जाना

३. प्यारी मोना

प्यारी मोना
जब-जब रोना
अम्मा खड़ी उदास
प्यारी मोना
जब-जब हंसना
अम्मा को है आस
प्यारी मोना
हरदम हंसना
सब खुशियों के पास

४. लोरी

मां-बच्चे का
सुन्दर गीत है
अद्‌भुत प्रीत है।

डॉ0नरेन्द्रनाथ लाहा,ग्वालियर,म.प्र.

देशकाल सम्पदा

सपा० डॉ. कुंवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम, सेन्ट्रल माइन प्लानिंग एण्ड डिजाइन इस्टीटयूट लिमिटेड, गोदवाना प्लेस, कॉकेरोड, रांची, झारखंड

खबर परिक्रमा

सपा० राजेन्द्र चंद्रकांत राय
खबर परिक्रमा, १२३४, जे.पी.नगर, अधारतल, जबलपुर, म.प्र. ४८२००४

सुदर्शन श्याम संदेश

सपा० श्री राधेश्याम दूबे
११६/६७, दर्शनपुरवा, कानपुर

रश्मिरथी द्विमासिक

सपा० श्री राधेश्याम आर्य, संपादक, मुसाफिरखाना,२२७८१३, सुल्तानपुर, उ०प्र०

१५वॉ अ.भा. हिन्दी साहित्य समारोह

गाजियाबाद. स्वाधीनता की प्रथम क्रांति के १५० वर्ष तथा स्वाधीनता के ६० वर्ष को समर्पित रहेगा १५वां अ.भा. हिन्दी साहित्य समारोह. इस वर्ष ३-४ नवंबर को स्थानीय हिन्दी भवन में आयोजित होने वाले उक्त सम्मेलन में पूर्व की भांति विचार गोष्ठियां, अ.भा. पत्र-पत्रिका पुस्तक प्रर्दशनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कवि सम्मेलन का आयोजन तथा राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मान प्रदान किये जायेंगे.
मुख्य संयोजक श्री उमाशंकर मिश्र के अनुसार सम्मेलन में प्रति वर्ष देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित होने वाले लघु पत्र-पत्रिकाओं के नवीनतम अंको के साथ ही २००६-०७ में प्रकाशित पुस्तकों की प्रर्दशनी लगाई जायेगी. प्रथम स्वतंत्रता क्रांति के महत्व तथा स्वाधीनता के ६० वर्ष पर केन्द्रित आलेख व विचार प्रस्तुत किये जायेंगे.
श्री मिश्र ने बताया कि सम्मेलन के अंतिम सत्र में, प्रतिवर्ष की भांति, राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मान प्रदान किये जायेगें. ये सम्मान विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान करने वालों को प्रमुखता के आधार पर दिये जाते हैं. सम्मेलन में भागीदारी निभाने, प्रर्दशनी, विचार गोष्ठी, कवि सम्मेलन सहित नामित सम्मानों के लिए प्रस्ताव आदि भेजने की अंतिम तिथि १५ सितम्बर २००७. सम्मेलन से संबंधित विस्तृत विवरण डाक द्वारा मंगाया जा सकता है.

उमाशंकर मिश्र, मुख्य संयोजक, ६६५, न्यू कोट गांव, जी.टी.रोड, गाजियाबाद
Ph 0120 2860110, 9818249902

यह बहती हुई नाक व छींके

लगातार नाक बहते रहना ज्यादा प्रचलित एलर्जी है जो एलर्जी रोगों का ५५ प्रतिशत हिस्सा है. करीब छः लोगों में से एक व्यक्ति को ज्यादा नाक बहने की शिकायत रहती है. नाक बहने के साथ-साथ छींकें भी आ सकती हैं और कुछ लोगों में यह दमे का रूप धारण कर सकती है. इसमें नाक बंद रहना, नाक बहना व छीकें आना प्रायः होता है. यह ज्यादा फरवरी, मार्च या जुलाई से अक्टूबर तक होता है, किसी में सारा वर्ष भी चलता है. यह कई प्रकार के पौधों के कणों या धूल के कणों या खाद्य पदार्थो से हो सकता है.

कुछ लोगों में नाक बार-बार नीचे से ऊपर रगड़ने से एक लाइन-सी बन जाती है जिसे लाइन आफ एलर्जी कहते है और इस तरह नाक रगड़ने को 'एलर्जिक सल्यूट' कहा जाता है. नाक की एलर्जी का कारण ढूंढना सबसे महत्वपूर्ण है, जैसे कि वह कार्य स्थल जहां आप काम करते है, पर होता है या कुछ दवाइयों से होता है. लगातार जुकाम में घरेलु धूल व माइट एक महत्वपूर्ण कारण है. यह माइट कालीन, गद्दे सिरहाने इत्यादि में सबसे ज्यादा होते हैं. ऐसे लोगों के घरों में कालीन वगैरा नहीं होने चाहिए व वैक्यूम क्लीनर से सफाई होनी चाहिए. कुत्ते, बिल्ली के फर से भी लगातार जुकाम ज्यादा होता है. एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है पोजन्ज यानी कि पौधों के पराग कण. इससे बचने के लिए खुली घास वाली जगह पर विशेषकर शाम व रात के समय नहीं घूमना चाहिए क्योंकि उस समय पराग कण अधिक मात्रा में होते है. लेकिन इन सभी कारणों को जानने के लिए एलर्जी टैस्ट करवाना अत्यन्त आवश्यक है ताकि उसका पक्का उपचार हो सके. लोगों को आमतौर पर यह पता ही नहीं होता कि एलर्जी टैस्ट के बाद इसका पक्का इलाज भी हो सकता है. यह दवाई मात्र २-३ केन्द्रों पर ही बनती है. अगर टैस्ट अच्छी तरह हुआ हो और दवाई का फार्मूला ठीक बन जाए तो करीब ८०-९० प्रतिशत रोगी ठीक हो सकते है.

घाटचवरे को कलम-कलाधर की सम्मानोपाधि

छत्तीसगढ़,रायपुर के उदयिमान रचनाकार राजा घाटचवरे को उनके प्रकाशित काव्य संकलन 'बगिया के फूल' के सृजन, प्रकाशन तथा उसकी लोकप्रियता को देखते हुए राजस्थान की संस्था अ.भा. साहित्य संगम, उदयपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-२००७ के अन्तर्गत 'कलम-कलाधर' की सम्मानोपाधि से अलकृंत किया गया. श्री घाटकवरे महालेखाकार विभाग की विभागीय पत्रिका 'मितान' का विगत दो वर्षो से संपादन भी कर रहे है.

++++++++++++++++++++++

कुंवर कान्त को साहित्य शिरोमणि

अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान के द्वारा पिथौरागढ़ के साहित्यकार इन्द्र बहादुर सेन 'कुंवर कान्त' को उनकी लम्बी साहित्य सेवा हेतु तथा खटीमा निवासी राज किशोर सक्सेना राज को बाल साहित्य में उत्कृष्ट लेखन हेतु ये सम्मान प्रदान किये गये.

राष्ट्रीय स्तर के दिव्य पुरस्कार अब भोपाल से

भोपाल, हिन्दी साहित्य जगत में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले, अखिल भारतीय अंबिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार अब भोपाल नगर से दिये जायेंगे.

दिव्य पुरस्कारों हेतु अब निम्न पते पर सम्पर्क करें-

श्रीमती राजो जगदीश किंजल्क, ४६, द्वारकापुरी, कोटरा रोड, भोपाल,म.प्र.

जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां

डॉ० कुसुम लता मिश्रा 'सरल'

पूर्व कार्यकारी संपादकःविश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद

श्रीमती विजया शुकला

अध्यक्षः जी.पी.एफ.सोसायटी, उ.प्र.

श्रीमती जया शुकला

प्रबंध संपादिकाः विश्व स्नेह समाज, **प्रबंध सचिवः** विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद

संचालिकाः स्नेहागंन कला केन्द्र, **निदेशकः** एम.टेक. कम्प्यूटर्स, इलाहाबाद

कविताएं

गीत

जख्म हंसते है और दर्द मुस्कराता है।
आकें नजदीक मेरे कोई लौट जाता है।।
ऑखों से बहें आंसू, और दर्द मुस्मराया।
तुझे मिल गयी खुदाई मुझे और ग़म खुदाया।।
तड़पे मेरे लवों पर तेरे प्यार के फसाने।
महबूब की तमन्ना जालिम जहां क्या जाने।।
तेरी हर तमन्ना पूरी मुझे चैन भी न आया।।ऑखों से...
ये फितरती हवायें फानूस बनके आयी।
गुच्चे लहक उठे और कलियां भी मुस्करायी।।
तेरे दिल के लिये राहत, लेके अश्याना आया।ऑखों से.

हरिचरण 'वारिज' भोपाल,म.प्र.

++

चमन को रिहाइश

चमन को रिहाइश अगर है बनाना,
हरिक शाख़ अपना समझ आशियाना।
परिन्दे, तिरी सैरगाह् आसमां भी,
मुक़ाबिल तिरे है नहीं ये ज़माना।
ऍ परदार, बेछत सभी है दिवारें,
क़फ़स में जहॉ अब तिरा है ठिकाना।
न हमदर्द की अब करो इन्तज़ारी,
उड़ो औ ज़मी का बनो शामियाना।
बहारीं सुरों से सजाओ ख़िजा भी,
लबों पे रहेगा तिरा ही फ़साना।
रहो 'मूक' अफ़सोस क्या है किसी को,
जहॉ में चहक हो अगर है निशाना।

महावीर प्रसाद मूकेश, सिरसा, हरियाणा

++++++++++++++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

रोशनी होगी नहीं तो घर अंधेरा ही रहेगा
मत तू कर अफसोस तेरा जो है तेरा ही रहेगा।
तेरी नज़रों में अगर माता-पिता की है कदर
तो मुसीबत में भी तेरे घर सबेरा ही रहेगा।।
जिस भी इन्सां को नहीं अच्छे बुरे का ज्ञान है
वो बना है गर लुटेरा तो लुटेरा ही रहेगा।
जिसके पाने के लिए हम खुद को कर बरबाद बैठे
वो कहीं भी जाये लेकिन सिर्फ मेरा ही रहेगा।
शूर ये दुनियॉ खुदा की जालिमों से भर गई
अब त जागा गर ये भारत तो अंधेरा ही रहेगा।।

सूर्य नारायण शूर, इलाहाबाद, उ.प्र.

बिन देखे उठी अंगुलियॉ

मुझे मिले उपदेश हजारों, लाखों चेतावनियॉ।
किन्तु पन्थ नापता रहा, बिन देखे उठी अंगुलियॉ।
शब्द-शब्द में दर्द भरा है, अर्थ-अर्थ में पीड़ा।
फिर भी अज्ञानी शिशु सा मैं, करता रहता क्रीड़ा।
चाहे धिक्कारे कोई या गाये बिरुदावलियॉ।।१।।
मुझको चिन्ता नहीं चांदनी हो या रात अमावस।
मैं अनवरत चला करता गर्मी हैं चाहे पावस।
मेरे पैर नहीं थकते दुर्गमपथ अथवा गलियां।।२।।
कुदरत ने मुझ पर बरसाये कई बार सौ कोड़े।
सौ-सौ बार राह में अड़चन आयी आये रोड़े।
पथ में बेपरवाह चला मैं पत्थर हों या कलियॉ।।३।।
जब सारा जग सोया करता मैं जागा करता हूॅ।
एक-एक धागे से चादर को तागा करता हूॅ।
मैं ताने-बाने बुनता हूॅ जग करता रंगरलियॉ।।४।।

रामगुलाम 'रावत', कानपुर रोड, लखनऊ

++++++++++++++++++++++++++++++++

नवीन दोहे

कौन किसी को मारता, और बचाता कौन।
हरि इच्छा से जग चले, देख तमाशा मौन।।१।।
कभी न मरती आत्मा, होता नष्ट शरीर।
नया रूप धारण करे, बने नयी तस्वीर।।२।।
कुब्बत तुझ में है बहुत, कर खुद की पहचान।
इन्सां की तो बात क्या, खुद पूछे भगवान।।३।।
रंग मंच सारा जगत, हम सब नाटककार।
अभिनय कर होते विदा, यही रीति संसार।।४।।
कौन जानता किस घड़ी, काल तुझे ले घेर।
कल ले जग में कुछ भला, जाना देर सबेर।।५।।
पढ़े लिखे जग में बहुत, विरले 'सरल' विवेक।
पढ़े पाठ निर्मल बनो, करते पाप अनेक।।६।।
आज दुखी जग में बहुत, रहे न कारण खोज।
करे प्रेम दूजे नहीं, धोखा देते रोज।।७।।
मजहब कहता है नहीं, करो किसी से बैर।
परम पिता जब एक है, हुआ कौन फिर गैर।।८।।
हमदर्दी जग से मिटी, रहे नहीं हमदर्द।
दीन दुखी नित पिस रहे, रहे देख सब मर्द।।६।।
किये पाप तूने बहुत, और बिगाड़ी सोच।
मिली सजा जब पाप की, रहा बाल क्यों नोंच।।१०।।
हाथ पसारे सब गये, गये जमा सब छोड़।
किस खातिर करता जुलुम, रहा पाप क्यों जोड़।।११

वी.के. अग्रवाल, बरेली

बिना पूछे रत्न न पहनें

गुलशन महकें अरबी ज्योतिष रमल में रत्नों का काफी महत्व है. रमल में रत्नों को मुख्यतः नौ प्रकार का माना जाता है. इन नैा प्रकार के रत्नों के अलग-अलग प्रतिनिधि ग्रह भी होते हैं.

इसमें पहला रत्न माणिक है, जिसका प्रतिनिधि ग्रह सूर्य है. रमल के अनुसार जिसका सूर्य प्रतिकूल चल रहा हो, उसे माणिक धारण करना चाहिए. मणिक गुलाबी रंग का होता है. इसे अनामिका अंगुली में सोने या तांबे की अंगूठी मे सोने या तांबे की अंगूठी में मढ़वाकर धारण करना चाहिए. ऐसा करने से नेत्र रोग, पित्त रोग, मिरगी रोग, हृदय रोग, हड्डियों की कमजोरी में लाभ मिलता है. इस रत्न को रविवार को दिन शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए. दूसरा रत्न है मोती. इसका प्रतिनिधि ग्रह चंद्रमा है. इसे सोमवार के दिन शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए. तीसरा रत्न मूंगा है. इसका प्रतिनिधि ग्रह मंगल है. अगर आपका मंगल प्रतिकूल है तो मूंगा पहनना लाभदायक होगा. मंगा धारण करने से चर्मरोग, रक्तविकार, रक्तचाप, पुराना जुकाम आदि रोग ठीक हो जाते हैं. इसे मंगलवार के दिन शुभ मुहूर्त में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में मढवाकर अनामिका अंगुली में पहनना चाहिए. चौथा रत्न है पन्ना. इसका प्रतिनिधि ग्रह बुध है. पन्ना धारण करने से हार्निया, फेफड़े के रोग, दमा, मिरगी और मानसिक रोगों में लाभ मिलता है. इसे बुधवार के दिन सोने की अंगूठी में मढ़वाकर कनिष्ठिका अंगुली में पहनना चाहिए. पांचवां रत्न है पुखराज. इसका प्रतिनिधि ग्रह बृहस्पति या गुरु है. पुखराज पारदर्शी होता है. यह तीन रंगों में पाया जाता है. सफेद, बासंती और पीला. अगर आपका गुरु प्रतिकूल चल रहा है तो पुखराज पहनना लाभदायक होता है. इसके अलावा यह तिल्ली के रोग, पीलिया, जिगर की सूजन, पाचनतंत्र की गड़बड़ियों में भी लाभदायक है. शीघ्र विवाह होने और अच्छे दाम्पत्य के लिए भी इसे धारण किया जाता है. सोने की अंगूठी में मढवाकर इसे तर्जनी में धारण करना चाहिए. छठा रत्न हीरा है, जिसका प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है. हीरा तीन प्रकार का होता है. इसे चांदी में मढ़वाकर शुक्रवार के दिन धारण करना चाहिए. सातवां रत्न नीलम है. इसका प्रतिनिधि ग्रह शनि है. नीलम वायुप्रकोप के कारण होने वाली बीमारियों, जोड़ों के दर्द आदि में लाभदायी होता है. इसे मध्यमा में धारण करने का विधान है. रमल ज्योतिष के अनुसार अगर शनि प्रतिकूल हो तो नीलम धारण करना चाहिए. इसे चांदी या पंचधातु की अंगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए. आठवां रत्न गोमेद है. इसका प्रतिनिधि ग्रह राहु है. गोमेद दो रंगो में पाया जाता है. एक तो गोमूत्र कें रंग का दूसरा सुनहरा. इसे धारण करना चर्म रोग, मिर्गी रोग, पांडु रोग आदि में लाभदायक होता है. यह मानसिक भटकाव को भी शांत करता है. इसे शनिवर के दिन मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए. नौवां रत्न लहसुनिया है इसका प्रतिनिधि ग्रह केतु है. इसका रंग बिल्ली की आंख की तरह होता है. इसे चांदी में जड़वाकर शनिवार के दिन शुभ मुर्हूत में धारण करना चाहिए. यह वायुरोग व गुप्तरोगों में लाभदायक है. रमल ज्योतिष के अनुसार अगर ग्रहों की स्थिति की सही गणना की गई हो तथा उसी के अनुसार रत्न धारण किए गए हो तो लाभ होता है. इसमें साथ रत्न के वज तथा शुभ मुहूर्त का भी खास ध्यान रखना चाहिए.

सुप्रभात, वाह रे जमाना, आज कल हेतु रचनाएं आमंत्रित है

काव्य संग्रह सुप्रभात-3 हेतु कवियों से दो रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा 100/-रुपये, वाह रे जमाना-निबध संग्रह हेतु दो निबंध जो पांच सौ शब्दों से अधिक का न हो, सचित्र जीवन परिचय सहित 250/-रुपये तथा कहानी संग्रह *आज कल* हेतु दो कहानी जो पॉच सौ शब्दों से अधिक की न हो, तथा सहयोग राशि 250/-रुपये मात्र सहयोग राशि के साथ आमंत्रित है. इन तीनों संग्रहों का विमोचन फरवरी 08 में संस्थान द्वारा आयोजित होने वाले साहित्य मेला-08 के अवसर पर किया जायेगा. अपनी रुचि अनुसार इसे 15 दिसम्बर 2007 के पूर्व भेजें. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसीः** 9335155949

पत्रिका में निरन्तर निखार आ रहा है

आपका आमत्रण पत्र मिला. इसके लिए आभार. इस कार्यक्रम में शामिल होने की हार्दिक इच्छा थी लेकिन मेरे पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के आधार पर उस वक्त मैं उत्तरांचल में अपने शोध कार्य हेतु बाहर हूँ. पत्रिका नियमित मिल रही है. पत्रिका स्वरुप निरन्तर निखर रहा है. पत्रिका ज्ञानवर्धक भी है. शेष सब कुशल है.

हेमा उनियाल, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++

पत्रिका का जून०६ अंक प्राप्त हुआ, आभारी हूँ. यौन उत्पीड़न पर आधारित आपका आलेख सच्चाई बयान करता है. चौटालाओं की कमी नहीं देश में तमाम नेताओं के द्वारा किये भ्रष्ट्राचार और उन की अपार धन-संपत्ति संग्रह की लोलुप प्रवृत्ति को उजागर कर रहा है यह आलेख. डॉ. रामनिवास मानव एवं डॉ. पूरन सिंह की लघु कथाएं प्रभावित करती है. अन्य रचनाएं भी अच्छी है.

प्रताप सिंह सोढ़ी, इन्दौर,म.प्र.

++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. इसकी कई रचनाएं अच्छी है. राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा स्वरुप आप साधुवाद के पात्र है. शुभकामनाओं सहित.

इं. त्रिलोक सिंह ठकुरेला आबू रोड, राजस्थान

++++++++++++++++++++

सामान्य कलेवर अपने में कुछ असामान्य सामग्री से भरा है.

विश्वास है आप सारस्वत साधना में लगे है और पत्रकारिता के माध्यम से लोगों को जोड़ने के महायज्ञ में आहुतियां दिये जा रहे है. आपकी सभी चेष्टाए सफल हो.

पत्रिका का जून०६ अंक मिला. पत्रिका सामान्य कलेवर अपने में कुछ असामान्य सामग्री से भरा है. राजनीति का अप्रिय चेहरा उजागर करके, दबी छिपी साहित्यिक प्रतिभा को मंच प्रदान करके और साहित्य समाचार प्रकाशित करके आप आपना सामाजिक कर्त्तव्य निभा रहे है.

अजयेद्रनाथ त्रिवेदी, उपमुख्य राजभाषा अधिकारी, यूको बैक, गुवाहटी

++++++++++++++++++++

स्वीकारें शुभकामना, नवसंवत्सर सहर्ष।
संघर्षमय जीवन का, हो उत्तम निष्कर्ष।।
हो उत्तम निष्कर्ष, नित बढ़े आपकी ख्याति।
छूटे गत जो कार्य, पावै पूर्णतया प्राप्ति।
कह शिल्पी कविराय, रहें पाठकों में प्यारे।
हो सम्पादन उच्च, ईश विनती स्वीकारें।।

मो० अन्सार 'शिल्पी', कौशाम्बी

++++++++++++++++++++

अलग है स्नेह समाज

'मासिक' तो मिलते कई,
अलग है 'स्नेह समाज'।
'होनी-अनहोनी' सभी,
दे देता है आज।।

सोना-हीरा चाहिए,
पति से है नहिं प्यार।
धक्का मुक्की कर रहीं,
ऐसी भी है नार।।

मुझे ओढ़ाती है कभी,
कम्बल और रजाई।
प्यार इसी का नाम है,
ईश्वर करे सहाई।।

'रामराज' के स्वप्न को,
करके हम साकार।
'राष्ट्र-धर्म' को दें तुरंत
एक पूर्ण आकार।।

पढ़ते-लिखते जो सदा,
दिन भर आधी रात।
ऐसे मनुज इने-गिने,
उनकी क्या है बात।।

क्यों, कैसे औ कब, कहॉ
किसका बना जहान।
'क' से बनते प्रश्न है,
उत्तर 'कमल' से जान।।

दुनिया बदली आजकल,
और साहित्य समाज।
बस 'डॉ.कमलेश' ही,
कल जैसे हैं आज।।

प्रथम बार पत्रिका पढ़ने का सुयोग्य आया. आज के हिसाब से पत्रिका सर्वांग पूर्ण है. विविध वर्णी पठनीय रुचि को ध्यान में रखा गया है. यह आपका सम्पादन, प्रबंधन कौशल है. बच्चों के यैान उत्पीड़न पर सम्पादकीय में आज की प्रमुख सामाजिक समस्या का अच्छा विवेचन किया गया है तथा उचित मार्गदर्शन माता-पिताओं को देकर बच्चों के तंग और छोटे पहनावे से बचने का सही संकेत दिया गया है. स्व रक्षा हेतु जूडो-कराटे आदि की शिक्षा भी आवश्यक हो गई है. इसमें मेरे अनेक साहित्यिक मित्रों की रचनाओं को पढ़कर हर्ष हुआ.

डॉ. कमलेश शर्मा, भोपाल, म.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका क्रांति धर्मी है

आप द्वारा प्रेषित अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका क्रांति धर्मी होने के साथ विश्व समाज को एक मंच पर उपस्थापित करती हुई परिलक्षित हो रही है. रचनाएॅ काफी सुन्दर और स्तरीय है. राष्ट्रीय स्तर की लघु पत्रिका का भविष्य उज्जवल हो यही कामना है.

मुरारी प्रसाद शर्मा, समस्तीपुर, बिहार

++++++++++++++++++++

आप अपना कर्तव्य बखूबी निभा रहे है.

पत्रिका का ताजा अंक मिला. एक बार पुनः याद ताजा हो गई. अपने कर्तव्य को निभाते हुए आप भारत की विविध समस्याओं को अपने पाठकों के

सामने लाने का पूरा प्रयास कर रहे है. अर्द्धकुम्भ विशेषांक संग्रह करने योग्य बन पड़ा है. हमारी तरफ से आपको तथा पूरी टीम को बधाइंया.
रचना यादव, अहमदाबाद
++++++++++++++++++++

डॉ० राज को मेरी हार्दिक बधाई
कृपया डॉ० राज बुद्धिराजा जी को मेरी ओर से हार्दिक बधाइंया एवं ७०वे जन्म दिवस हेतु मंगलकामनॉए प्रेषित करेंगे. मैं समझता हूँ कि ऐसे कार्यक्रमों में हर लेखक को अपनी भागादारी सुनिश्चित करना चाहिए क्योंकि साहित्यकारों को ऐसे बिरले अवसर मिलते है.
ओम उपाध्याय, भोपाल, म.प्र.
++++++++++++++++++++

पत्रिका की सामग्री इसके मूल्य को देखते हुए काफी अच्छी है. आप परिश्रमी व्यक्ति है. निरपेक्ष भाव से आपके परिश्रम की अधिकाधिक प्रशंसा की ही जानी चाहिए. ईश्वर करे कि आपकी यही आस्था सदैव ही बनी रहे और साहित्य की दिनोदिन प्रगति करें.

रंग बिरगी सजी रहे
जीवन में नित रंगोली
लेकर आये उमंगे
नयी प्रगति यह होली।।

मुन्नेबाबू दीक्षित, पीलीभित, उ.प्र.
++++++++++++++++++++

पत्रिका उपलब्ध कराने हेतु धन्यबाद. अध्ययन मनन किया साधन पथ पर अग्रसर होते आप बधाई के पात्र है. युगो-युगों तक इसी प्रकार विश्व समजा को स्नेह प्रदान करते रहें, यही कामना है.

मुदित हुआ मन, पढ़ विश्व स्नेह समाज।
स्नेह सुधा रस बॉटता घर-घर आज।
फूले-फले बढ़े मॉ वाणी वरदान
हिन्दी विश्व समाज के सारे सारे काज

डॉ०महावीर सिंह, रायबरेली

पत्रिका हर दृष्टि से काबिले तारीफ है. पत्रिका की साज सज्जा तथा सामग्री काफी स्तरीय होती है. साहित्य को समृद्ध कर आप बहुत ही पुनीत कार्य कर रहे है. आशा है आपके कुशल संपादन में पत्रिका सोपान पर आसीन होगी. कुशल प्रकाशन के लिए पत्रिका परिवार को बधाई.
शब्बन खान 'गुल',लखनऊ, उ.प्र.
++++++++++++++++++++

हिन्दी जगत आपका आभारी रहेगा
हिन्दी साहित्य की उच्च्य स्तरीय पत्रिका विश्व स्नेह समाज का अंक पाकर अभिभूत हूं. इसमें श्रेष्ठ समाचार, लेख, गीत, गज़ल, कविता व कहानी का प्रकाशन कर आपने हिन्दी को महत्तम संबल प्रदान किया है. आप व आपकी संस्था साहित्य, कला, समाज एवं देश की सेवा करने का ऐतिहासिक कार्य रहे हैं. आपके द्वारा किये जा रहे महान कार्य के लिये समस्त हिन्दी जगत आपका आभारी रहेगा.
मैं हृदय से आपके इस रचना सारस्वत अनुष्ठान को प्रणाम करता हू व दीघायुत्व को अशेष मंगल कामनाएं.
अब्दुल समद राही, पाली राजस्थान
++++++++++++++++++++

माननीय सम्माननीय श्रीयुत सम्पादकजी को मेरा नमस्कार कहना,
होठों पे मेरा नाम दिल में मेरी याद कहना,
दिल थाम के रहिएगा कयामत आ रही है
आपके राष्ट्रीय पत्रिका में दीवाना
हिन्दुस्तानी की कवितायें प्रकाशन के लिए आ रही है.
शायरी है मेरे बागी की पढ़िएगा शौक से
खत है दीवाना जवाब दीजिएगा शौक से.
दीवाना हिन्दुस्तानी, रीवा, म.प्र.
++++++++++++++++++++

पत्रिका में निरन्तर निखार आ रहा है
विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. अंक थोड़ा पुराना है किन्तु सामग्री बिल्कुल नयी लग रही है. सम्पादकीय में संतो के जीवन के सत्य का एक पहलू पढ़कर मन घृणा से भर गया. सत्य का साथ निभाते रहिए. पत्रिका में समाहित अन्य सभी रचनाएँ बहु ही अच्छी रही.
डॉ. बृजेन्द्र सिह बैरागी,बलिया,उ.प्र.
++++++++++++++++++++

आपने संपादकीय में सच ही लिखा है
पत्रिका का ७५वॉ अंक मिला. डॉ. राज बुद्धिराजा विशेषांक संग्रहणीय तथा सराहनीय है. संदेश में वी.पी.सिंह, इंद्र कुमार गुजराल, डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, विष्णुप्रभाकर आदि इससे पत्रिका गौरव बढ़ा है. अपने संपादकीय में आपने डॉ. राज बुद्धिराजा को भारत रत्न क्यों नही सच है. आपके मन से मैं सहमत हूँ. हिंदी भाषा, हिन्दी साहित्यकारों का यही दुर्भाग्य है. लेकिन हिंदी भाषा का भविष्य उज्जवल है. वह संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा जरूर बनेगी. डॉ. राजा बुद्धिराजा का उचित सम्मान जरूर होगा. यही सदीच्छा
एस.बी. मुरकुटे, बेलगांव, कर्नाटक
++++++++++++++++++++

इनके भी पत्र मिले-
श्री श्याम मोहन दुबे, जबलपुर, म.प्र.
प्रो० जयशीन, सिवान, बिहार

सहयोगी पत्रिकाएं

अध्यात्मिक आंदोलन मासिक
विवेकानन्द योगाश्रम, पटपर गंज रोड, चुरेजी, देल्ही-११००५१

आध्यात्म अमृत
प्रधान संपादकः **श्री कृष्ण टवाणी**
सिटी रोड, मदनगंज, किशनगढ़, राजस्थान-३०५८०१

मकरंद
सपादकः श्री रामसहाय वर्मा, मकरंद प्रकाशन, बी-१४, सेक्टर-१५, नोएडा-२०१३०१

पटलवार

✍ **डॉ०महावीर सिंह**, रायबरेली,उ.प्र.

प्रदेश की विधानसभा चुनाव नतीजे आने प्रारम्भ हो गये थे. मैं सुबह का नाश्का करके जैसे ही बाहर आया, सलीम मिया अखबार के साथ आ ध मके, और चहकते हुए बोले-'बाबूजी देखिए अपने विधायक जी भी गोता खा गये.'

"अरे नहीं भाई, यह अनहोनी कैसे? एक सत्ता पार्टी का विधायक, जिसके लिए शासन-प्रशासन ने हर दाव चलाया था- फर्जी वोटिंग, बूथ कैप्चरिंग, मतदाताओं को हड़काना, धमकाना, क्या नहीं हुआ.....?"

"फिर भी तो हार ही गये और भारी मतों से यह देखिए आज का अखबार" सलीम ने अखबार बढ़ाते हुए कहा.

"लेकिन सलीम यह हुआ कैसे?" मैंने अखबार थामते हुए कहा?

"यह पूछिए हुआ क्यों?" इनकी पार्टी के जिलाध्यक्ष ने इनकी हार की घोषणा चुनाव से पूर्व ही कर दी थी और कई चुनावी सभाओं में भी दुहराया था कि.

"तो अध्यक्ष के खिलाफ पार्टी एक्शन क्यों नहीं हुआ?" मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा.

"बाबूजी, आपको याद होगा कि चुनाव से कुछ माह पूर्व इनके जिलाध्यक्ष ने एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि भगोड़ों को जनता खुद ही भगा देगी. "-सलीम ने याद दिलाते हुए कहा.

"लेकिन यह तो जिलाध्यक्ष ने उन लोगों के लिए कहा था जो सत्ता पार्टी छोड़कर विरोधी पार्टी में गये थे." मैने वास्तविकता जताते हुए कहा.

"आप ठीक कह रहे है बाबूजी. लेकिन जनत तो हर काने को काना ही कहेगी. भगोड़ा तो भगोड़ा है., चाहे जहॉ गया हो, चाहे जहां से आया हो. भगोड़े तो यह भी थे जो विरोधी पार्टी छोड़कर लाल बत्ती के लालच में सत्ता पार्टी में आये थे. जनता ने तो भगवान राम के परम भक्त विभीषण को भी घर का भेदिया कहने से नहीं छोड़ा. सलीम ने सटीक आधार प्रदान करते हुए तर्क दिया."

मुददा उठाया गया था किसके लिए-शिकार कौन हो गया. इसे कहते है पलटवार, भाई यह खूब रही. मॉगने गई थी पूत, मर गया भतार.मैने हॅसते हुए कहा.

जनता तो जर्नादन होती है, उसका फैसला सदैव सही होता है. उसने मियॉ की जूती मियॉ के सिर पर ही जड़ दी.

सलीम ने नहले पर दहला लगा मुझे विचार सागर ढकेल चलता बना.

मुट्ठी भर मांटी

✍ **नन्दलालराम भारती**, इंदौर,म.प्र.

हमारे घर के ठीक सामने वाले मकान में लालानरायन जी रहते थे. अक्सर वे सुबह सुबह मेन गेट पर अखबार पढ़ते हुए नजर आ जाते थे. काफी संघर्षशील वसूलपसन्द व्यक्ति थे पर बेचारे कैंसर से लड़ रहे थे. वे बातचीत के दौरान शहर के अपने दस साल पुराने दोस्तों का बखान करते ना थकते थे. ८ तारीख मई २००७ के दिन वे अखबार पढ़ते हुए नहीं दिखायी पड़े. इस बात पर घर में चर्चा छिड़ गयी. इतनें में छोटा बेटा चहकते हुए बताया सामने वाले अंकल और अंण्टी आटो में बैठकर कही गये. बात आयी गयी हो गयी. दफ्तर पहुंचे आधा घंटा भी नहीं हुआ कि टेलीफोन घनघना उठा. टेलीफोन उठाया अवाज आयी पापा सामने वाले अंकल की डेथ हो गयी. यह मेरे छोटे बेटे का ही फोन था. मैं आनन फानन में घर आ गया. मैयत में शामिल होने के लिए. लालानरायन जी के हित मित लोग इकट्ठा हो रहे थे. सुदूर गांव से और दूसरे शहरों से लोग चल चुके थे. आना जाना लगा हुआ था. लालानरायन जी के एक पुराने एवं सुख के दोस्त की पत्नी लोगों की नजरों में छिपते छिपाते हुए एक गली से तीसरी गली में गयी और एक बालक को बुलाकर धीरे से बोली जा बेटा पता लगाकर आ कि लालानरायन को मुक्तिधाम कब ले जायेंगे और वे चुपचाप चली गयी. उधर लालानरायनजी के घर रोना चिल्लाना मचा हुआ था पर उस महिला का जरा भी दिल नहीं पसीजा कि सात्वना के दो बोल बोल दे. एक दिन रात के इन्तजार के बाद लालानरायन जी के मृतदेह का अन्तिम संस्कार हुआ पर सुख के साथी और पड़ोस के लोग नदारत थे. हां उनके सगे नात हित, दूर के मानवतावादी लोग एवं हजारो मकान वाली कालोनी में से सिर्फ पांच इंसानियत के पुजारी लोग शामिल थे. लालानरायन के जनाजे में, जिनका दूर दूर तक कोई सुख का साथ ना था और ना ही जातीय रिश्ता था. नरोतम की बात सुनकर पुरूषोत्तम के मुंह से निकल पड़ा वाह रे आज के पड़ोसी और सुख के साथी एक मुट्ठी मांटी भर न दे सके.

सहयोगी पत्रिकाएं

तटस्थ

सपादकः **डॉ. कृष्ण बिहारी सहल**, विवेकानन्द विला, पुलिस लाइन्स के पीछे, सीकर, ३३२००१, राजस्थान

वर्तिका

संपादकः **श्री रामेश्वर पतंग**, समीर सदन, ग्रा.वपो.-बघाड़ी,भाया मानिक चौक, सीतामढ़ी-८४३३२३, बिहार

जर्जर कश्ती

संपादकः **श्री ज्ञानेन्द्र साज**,१७/२१२, जयगंज, अलीगढ़-२०२००१, उ०प्र०

राजरानी चाय, जरा हंस दो मेरे भाय

☠ बस स्टैंड पर खड़ी बस के बाहर खड़े आदमी ने आवाज दी, 'रामफल, ओ रामफल.'
आवाज सुनकर एक आदमी बाहर सिर निकालकर उसे देखा. इस पर बाहर खड़े आदमी ने उसके मुंह पर करारा चांटा मारा. उस आदमी ने अपना सिर अंदर कर लिया. नीचे खड़े आदमी ने फिर आवाज दी, 'रामफल, ओ रामफल.' उस आदमी ने फिर अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला तो बाहर खड़े आदमी ने फिर उसके मुंह पर एक चांटा जड़ दिया. उसने फिर अपना सिर अंदर कर लिया. ऐसा बड़ी देर तक होता रहा. इस पर बगल में बैठे दूसरे यात्री से न रहा गया तो उसने पूछा, -'आप भी अजीब आदमी है. वह बार-बार आपको पीट रहा है और आप पिटे जा रहे है.
'मेरा नाम रामफल थोड़े है, मैं तो इस आदमी को बेवकूफ बना रहा हूँ.' पिटने वाले आदमी ने जवाब दिया.
☠जग्गू पहलवान के पूरे शरीर पर पट्टियां बंधी थी. जिन्हें देखकर उनके पड़ोस में रहने वाला पिन्टू चौक गया. 'पहलवान चाचा, आपके शरीर पर ये पट्टियां कैसी?' पिन्टू ने पूछा.
'कुछ नहीं, जरा अपनी गली के नुक्कड़ वाले सत्तू से कहा-सुनी हो गई थी.' जग्गू पहलवान ने दर्द से कराहते हुए कहा.
'अरे, वो सत्तू, वो मरियल, झींगुर सा सत्तू?' पिन्टू ने चौक कर पूछा. 'चुच रहो, मरे हुए को बुरा-भला नहीं कहते' जग्गू पहलवान ने पिन्टू को समझाते हुए कहा.
☠अक्षित-पापा-पापा, यह दुल्हन क्यों रो रही है?
पापा-बेटा इसे ससुराल भेज रहे है न, इसलिए.
अक्षित-अच्छा मैं समझा इसे स्कूल भेज रहे है.
☠ अध्यापक-तुम्हें पता है कि स्वर और व्यंजन में क्या अंतर है?
अक्षित-हां पता है. स्वर मुंह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुंह के अंदर जाते है.
☠ माणिक-भैया एक बात बताओ, मोटे लोग हमेशा मीठी बातें क्यों करते है?
अक्षित-क्योंकि कड़वी बात कहकर वह भाग नहीं सकते ना...
☠कमल-तुम्हारे पास सौ रुपये की रेजगारी होगी?
प्रिंस-हां है, दूं क्या?
कमल-नहीं यार, मैं तो केवल कंफर्म कर रहा था कि कल चौराहे पर कटोरा लेकर तुम ही खड़े थे न.
☠प्रिंस-एक मशहूर कोल्ड ड्रिंक के हजार ढक्कन जमा करने पर मुझे इनाम मिला है.
कमल-क्या इनाम मिला?
प्रिंस- हजार ढक्कन रखने के लिए कंपनी ने मुझे बक्सा दिया.
☠मुनीष (गुस्से में)-अक्षित को इस तरह नहीं पीटना चाहिए. देखो इतनी देर हो गई, जाने कहां चला गया.
अंजु-जाएगा कहां? बिल्कुल तुम पर गया है. देखो पलंग के नीचे या आलमारी के पीछे छुपा होगा.
☠कमल-क्या रसगुल्ले स्वास्थ्य के लिए ठीक होते?
अक्षित-तुम मुझे रसगुल्ले खिलाओ, वह स्वास्थ्य के लिए ठीक होगें और मैं खिलाऊ, तो ठीक नहीं होगें.
☠कमल-मेरा एक कर्मचारी रोज़ दफ्तर में सो जाता था और जोर-जोर से खर्राटे भरने लगता था.
प्रिस-तो तुमने उसे नौकरी से निकाल दिया होगा.
कमल-नहीं भई, मैंने उसकी तनख्वाह बढ़ा दी.
प्रिंस-अरे...वह किसलिए?
कमल-अरे भई, उसके खर्राटे बाकी लोगों को जगाए रखते हैं.
☠टीचर-बताओ बच्चो, डॉ. आपरेशन करते समय मरीज को बेहोश क्यों कर देते है?
प्रिस-ताकि सर मरीज खुद कहीं ऑपरेशन करना न सीख जाए.
☠डॉक्टर-एक चम्मच को एक गिलास में मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम पीना.
मरीज-चम्मच को?
डॉक्टर-जो पहले घुल जाए.
आप भी अपने अच्छे चुटकुले भेज सकते हैं. अच्छे चुटकुलों को नाम सहित प्रकाशित किया जाएगा.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

पुस्तक समीक्षा

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी-कहानी के प्रमुख स्तम्भ

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्वातत्रयोत्तर हिन्दी-कहानी के प्रमुख लेखको की कहानियों का संक्षिप्त विश्लेषण किया है. लेखक ने निम्नलिखित कहानिकारों का क्रमानुसार मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, अमरकान्त, शिव प्रसाद सिंह, कृष्ण बलदेव वैद, ज्ञान रंजन, दूधनाथ सिंह, रमेश वक्षी, रवीन्द्र कालिया, गिरिराज किशोर, काशीनाथ सिंह, हृदयेश, गोविन्द मिश्र लिपीबद्ध किया है. लेखक के अनुसार हिन्दी कहानी में सन् १९५० के आस-पास जो बदलाव आया उसके प्रतिनिधि कहानीकार निर्मल वर्मा, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त आदि थे. इन्हीं से नयी कहानी की पहचान बनी.

लेखक के इस पुस्तक में स्वातत्रयोत्तर हिन्दी के कुछ कहानीकारों की कहानी-कला का परिचय मात्र दिया है. जिससे हिन्दी कहानी की समृद्धि और उसकी वहिर्मुखी प्रवृतियों की झलक मिल सके.

लेखकः परमलाल गुप्त, **प्रकाशकः** पीयूष प्रकाशन, नमस्कार शारदानगर, बस स्टैण्ड के पीछे, सतना, म.प्र.

दनकौर से लखनऊ तक

किंग जॉर्ज मेडिकल कालेज के सेवानिवृत प्रोफेसर ऑफ सर्जरी एवं सुहृद प्रतिष्ठित लेखक डॉ.टी.सी.गोयल द्वारा विरचित 'दनकौर से लखनऊतक' का यह तृतीय संस्करण है. इसका प्रथम संस्करण २००२ में छपा था. इस अल्पावधि में इसे पॉच सम्मान भी प्राप्त हुए है. इसकी लोकप्रियता इसी से आकी जा सकती है.

डॉ. गोयल ने बड़ी निष्ठा और ईमानदारी से अपनी कृति 'दनकौर से लखनऊ तक' में अपने अनुभवों को सार्वजनिक किया है. ये अनुभव जन्मजात और अर्जित प्रेरणाओं के फलस्वरुप प्रकट हुए है जिनकी उपयोगिता भी जनसिद्ध है. गोयल जी ने लेखक होने का भ्रम नहीं पाल रखा है. उन्होंने जो कुछ भी पाठकों के लिए दिया है, उसे उन्होंने बखूबी देखा पढ़ा और जिया है. इस तृतीय संस्करण में बहुत सी ज्ञानप्रद बातें जोड़ी गयी है जो जीवन को नियमित-संयमित रखने में बहुविध उपयोगी हो सकती है. चिकित्सक होने के नाते यह उपयोगी ज्ञान थोथा नहीं बल्कि कारगर है. बशर्ते अमल करने की जिज्ञासा प्रबल हो. इसके अन्तर्गत मुहावरों-कहावतों की एक लंबी सूची है जिन्हें अधिकांश लोग जानते ही नहीं है. लेखक गोयल जी देश-विदेश का भ्रमण कर चुके है. इसलिए उनके अनुभव का दायरा विविध विषयों से सम्बद्ध है जो प्रशंसनीय है. 'ज्ञान के मोती' अध्याय में लेखक ने उन तमाम महापुरुषों के सद्वचनों का उद्धृत किया है जिन्होंने मानवीयता की स्थापना में अपने जीवन की आहुति दे दी और मानवमूल्यों को सार्थकता प्रदान की.

निःसंदेह कृति का संशोधित तथा परिवर्धित तृतीय संस्मरण पठनीय एवं जनपयोगी है. ग्रंथ की छपाई-सफाई उत्तम है. इसका कोई मूल्य नहीं है. अतः इसे अमल्य कहा जाय तो अतियुक्ति न होगी. गोयल जी निरन्तर स्वस्थ रहें एवं दीघार्यु हो ईश्वर से यही प्रार्थना है.

लेखकः डॉ. टी.सी.गोयल

प्रकाशकः अत्रि, बी २/१६, सेक्टर-एफ, जानकीपुरम्, लखनऊ-२१

आनन्द धाम

प्रो० जोशी की आध्यात्मिक काव्य कृति 'आनन्दधाम' के अध्ययनोंपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि अपने गृहस्थ जीवन को पूरी तरह जी चुका सात्विक नामक एक गृहस्थ, घर संसार को छोड़कर लोक-परलोक तथा जन्म मरण की बातों के उधेड़बुन में हर पल लगा रहता है. एक दिन स्वप्न में उसे संत का साक्षात्कार होता है और उनसे वह अपने अवशिष्ट जीवन में परम शांति हेतु आनन्द धाम को जाने की सद्प्रेरणा प्राप्त करता है. मनोकामना के चरमोत्कर्ष पर पहुॅचने पर वह एक दिन घर से निकल पड़ता है और आगे चलकर एक चमत्कारी बाबा के रुप में प्रसिद्धि पाता है. जिससे उसे प्रभूत धन मिलने लगता है और मंदिर का पुजारी उसका अनुचित लाभ उठाता है. लेकिन जब वह प्राप्त धन के दुरुपयोग पर नैतिक उपदेश देने लगता है तो पुजारी के लड़के उसे जबरन जंगल में ले जाकर अधमरा कर छोड़ देते है. गांव लोग उसका उसका ईलाज कराते है. वह स्वस्थ होकर गांव की भलाई करता है. एक वह गांव आदर्श ग्राम बन जाता है. अन्त में सात्विक अपने गंतव्य आनन्दधाम में पहुच जाता है.

प्रो. जोशी का यह एक अद्‌भुत और अनूठा सफल प्रयास है.

लेखकः महेन्द्र जोशी

पूर्व उपप्राचार्य, हिन्दु कॉलेज

सम्पर्कः ३०ए, गोपाल नगर, अमृतसर पंजाब

मूल्यः ३०रुपये मात्र

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) २.हिन्दी महाविद्यालय ३.चिकित्सालय ४.पुस्तकालय ५.प्रकाशन ६.गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः

१.जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २.१ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.

जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
सचिव, जी.पी.एफ. सोसायटी
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी'राही अलबेला'**का

लघु उपन्यास

रोड इंस्पेक्टर

कीमत 20 रुपये

अभी अपनी प्रति सुरक्षित करवा लें. कहीं देर ना हो जाए, कहीं देर ना हो जाए

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए पंजाब नेशनल बैंक की किसी शाखा से खाता संख्याः 0369000100161306 शून्य तीन छः नौ शून्य शून्य शून्य एक शून्य शून्य एक छः एक तीन शून्य छः में जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है. कुल 40 ईनाम है.

लिखेंः **प्रसार सचिव,**
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
मो० ६३३५१५५६४६ **email:** roadinspector@rediffmail.com

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

साहित्य श्री सम्मान ०७ हेतु प्रविष्टिया आमंत्रित

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा २००३ से लगातार साहित्यकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों को सम्मानित कर रहा है. इस वर्ष सम्मानों की संख्या में कमी करते हुए २५ कर दिया गया है.

१.साहित्य श्रीः(रु०५००१/-)एक कहॉनी तीन प्रतियों में. **२.डॉ.रामकुमार वर्माः**(रु०२५००/-)एक नाटक तीन प्रतियों में **३.बाल श्री सम्मानः**(रु०११००/-)एक बाल कहॉनी तीन प्रतियों में, ४.**कैलाश गौतम सम्मानः** कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में, ५. **डॉ. किशोरी लाल सम्मानः** श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में, ६.**राजभाषा सम्मानः** यह सम्मान सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ७.**समाज श्रीः** गत ५ वर्षो के सामाजिक कार्यो का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तीन प्रतियों में, ८.**सम्पादक श्रीः** पत्रिका के कोई तीन अंक तीन प्रतियों में, ९.**युवा पत्रकारिता सम्मानः** पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में, **१०.राष्ट्रभाषा सम्मानः** यह अहिन्दी भाषी क्षेत्र के किसी विद्वान द्वारा हिंदी के उत्थान के लिए किए गए कार्य के लिए दिया जाएगा. सम्पूर्ण जानकारी सहित लिखें, **१० मानद उपाधियांः** सम्पूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों का लेखा जोखा तीन प्रतियों में,
११. विश्व हिंदी साहित्य सेवा अंलकरणः लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. इनके किसी भी पृष्ठ पर पेन से कोई शब्द न लिखें. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे. **विशेषः** १.सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें। २.प्रविष्टि के साथ १००/-रुपयें का धनादेश मनिआर्डर/बैकड्राफ्ट सचिव के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगें. ३.प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें. **अंतिम तिथिः ३० नवम्बर २००७**

लिखेंः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

बाल काव्य प्रतियोगिता

आयोजकः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद एवं हि.मा. 'विश्व स्नेह समाज

1. इस प्रतियोगिता में *10 से 18 वर्ष की उम्र* का कोई भी बाल कवि/कवित्रि भाग ले सकता/सकती है. 2. प्रतिभागी को अपने छायाचित्र के साथ जीवन परिचय व वह रचना भेजनी होगी जिसे वह प्रतियोगिता में पढ़ना चाहता है. 3. रचना पर *"यह मेरी मौलिक रचना है"* लिखना व नाम, पता लिखना अनिवार्य होगा. 4. प्रतियोगिता *फरवरी 2008 में इलाहाबाद* में आयोजित की जाएगी. अपनी प्रविष्टि हमें *30 नवम्बर 2007* के पूर्व जबाबी लिफाफे के साथ भेजें.

लिखेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, **मो०:** ०६३३५१५५६४६

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. आर.एन.आई यूपीहिन्दी2001/8380 डाकपंजी.सं0: एडी.306/2006–08 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी